शब्द रंजन

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 2 | अंक 10 | उदयपुर गुरुवार 01 जून 2017 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

प्रताप जयंती पर विश्ववासियों को शुभकामनाएं

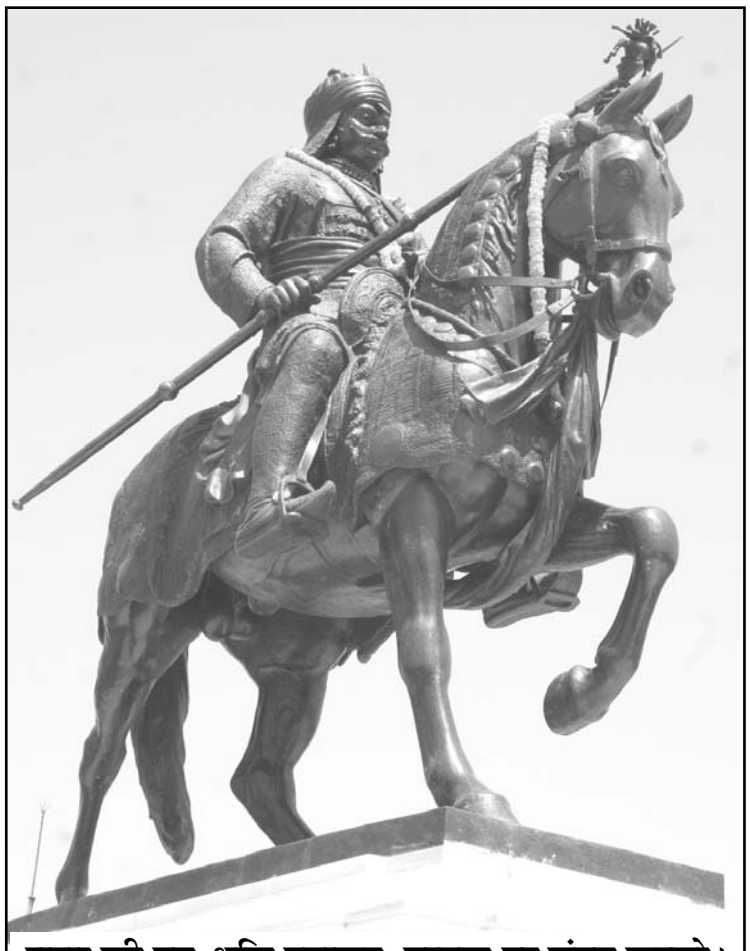

राणा की पद-धूलि उठाकर, मस्तक पर चंदन करलो।
राष्ट्र देवता के चरणों में, उठो-उठो वंदन करलो।।
(कविवर श्यामनारायण पांडे द्वारा डॉ. भानावत को प्रेषित पत्र से)

चुनौतियों की तलाश करता लोकसाहित्य

-डॉ. विद्याविन्दुसिंह-

आज लोकसाहित्य के समक्ष अनेक चुनौतियां हैं। गांव-शहर बन रहे हैं। शहरों में गांवों का प्रवेश जड़ों से कटकर हो रहा है। लोकसाहित्य तमाम चुनौतियों विरोधों और संघर्षों के बीच अपनी राह बनाता हुआ अपने अस्तित्व की रक्षा स्वयं करता है। वह सहनशील है किंतु विद्रोह करके नयी धारा भी प्रवाहित करता है साथ ही जो धारायें क्षीण हो रही हैं या मिट रही हैं उनसे अपनी धारा को जोड़कर उन्हें जीवन देता है।

प्रत्येक भाषा का लोकसाहित्य अपना विशिष्ट महत्व रखता है। उसकी विभिन्न बोलियों, भाषाओं में सोंधी मिट्टी की जो महक होती है, गीली मिट्टी के लोंदे जैसी हर रूप में ढल जाने की जो क्षमता होती है, हरे बांस की कैन (टहनी) जैसी जो लचक होती है वह विलक्षण है। इसीलिए लोकसाहित्य भी विलक्षण है।

लोकसाहित्य अतीत का दस्तावेज भी है और भविष्य का दिशावाहक भी। यह अपनी जड़ों से जुड़े रहने का अनुराग और संकल्प देता है। इसमें इतिहास की घटनाएं भी रोचक ढंग से प्रस्तुत होती हैं और लोक की स्मृति तथा समझ अपने ढंग से प्रस्तुत होती है। कहीं-कहीं लोक को प्रेरणा देने या रोचकता लाने के लिए अतिशयोक्ति भी मिलती है। ऐतिहासिक और पौराणिक प्रसंग मिथक रूप में जुड़ते रहते हैं जिसमें घटना या चरित्र को तरह-तरह के प्रतीकों के माध्यम से व्यक्त किया जाता है।

लोकसाहित्य चेतना का साहित्य है। यह चेतना समकालीन परिस्थितियों के दबाव से आती रही है। भक्ति आन्दोलन में लोकभाषाओं में लिखा गया साहित्य भी इसी का प्रमाण है। यह दबाव लोक भी अनुभव करता रहा है और समय-समय पर उसकी अभिव्यक्ति भी होती रही है। 1857 और 1947 के स्वतंत्रता संग्राम के समय की ललकार और पराधीनता की पीड़ा को लोकसाहित्य ने अविस्मरणीय और प्रेरक स्वर दिया।

लोकभाषाओं के साहित्य में परस्पर आदान-प्रदान और ग्रहणशीलता है जिसके कारण ज्ञान का परस्पर मिश्रण होते-होते विस्तार होता रहता है। लोकसाहित्य में बालसाहित्य की भी अथाह सम्पदा है। लोरी और पालने के गीत हैं। खेल के गीत हैं। लोककथाएं हैं। लोकनाट्य हैं। कहावतें, पहेलियां हैं। उच्चारण शुद्ध करने के लिए वाक्यांश हैं। हमारी जिम्मेदारी है कि हम बच्चों की आवश्यकताओं को समाज के संदर्भ में समझें।

लोकसाहित्य अभिलेखागार में संरक्षित करने वाली निर्जीव वस्तु नहीं है। वह जीवन-प्रवाह में बहती रहे, यह जरूरी है। लोकसाहित्य गंगा की भांति प्रवाहित है जिसमें निरन्तर समय के परिवर्तन के साथ आवश्यकतानुसार कुछ जुड़ता रहता है और जो अनावश्यक होता है वह छूटा जाता है।

लोकसाहित्य परम्परा की विरासत या धरोहर होते हुए आवश्यकतानुसार परिवर्तन भी ग्रहण करता रहता है। परिवर्तन सामूहिक, जातीय संकल्प से होता है। यह स्वीकृत मूल्यों की जांच भी करता रहता है और समय की कसौटी पर कसकर परीक्षा भी लेता है। आवश्यकता पड़ने पर समाधान भी देता है। यह मनुष्य को सम्पूर्ण जीवन के आदान-प्रदान की सार्थकता देता है। संवाद की शैली में अपनी बात को सम्प्रेषित करता है। लोकसाहित्य संस्कृति के संरक्षण का, उसके विकास और प्रवाह का संकल्प रखता है इसलिए उसे परम्परावादी साहित्य कहा जाता है। लोकसाहित्य की पहली शर्त व्यक्तित्व का विलय हो जाना है। आज लोकसाहित्य के समक्ष अनेक चुनौतियां हैं।

अस्तित्व खोरही भाषाओं की चिंता

-सुरेश पंडित-

लोक भाषाएं बचेंगी तो लोक संस्कृतियां भी बची रहेंगी। उनमें समाहित वे मूल्य भी बचे रहेंगे जो लोक को जीने की शक्ति, हर तरह की आपदा-विपदाओं से लड़ने की शक्ति और अपने आचार व्यवहार को मर्यादित रखने की शक्ति देते हैं।

दुनिया में बोली जाने वाली भाषाओं की संख्या लगभग 7000 है। हर एक पखवाड़े में औसतन इनमें से एक भाषा अपना अस्तित्व खो रही है। समाज या देश की मुख्यधारा में पिछड़ों, आदिवासियों या दूरदराज के गांवों-ढाणियों में रहने वाले दीन-हीन लोगों को विकसित-सभ्य समाज की मुख्यधारा में लाने की इच्छा या उनके आने की मजबूरी, उन्हें अपने परिवेश से काटती ही है।

भाषा से भी दूर करती है। इसी तरह छोटी अर्थात् छोटे समुदायों की भाषाएं मरती हैं और बहुसंख्यक समुदायों की भाषा के बोलने वालों की संख्या बढ़ती जाती है। ये आप्रवासी लोग अपनी भाषा को छोड़कर जिस मुख्य-प्रचलित भाषा को अपनाते हैं उसमें अपने साथ लाये अपनी भाषा के शब्दों को समाविष्ट कर उसे तो समृद्ध बना देते हैं लेकिन स्वयं अपने प्रेरक अतीत से विलग हो जाते हैं।

अल्पसंख्यक आदिवासियों की छोटी-छोटी भाषाएं हर रोज नष्ट होने या बहुसंख्यकों की भाषाओं में विलीन होने की ओर अग्रसर हैं। मरणासन्न भाषाएं उन्हीं इलाकों में बोली या समझी जाने वाली हैं जो अविकसित या अल्पविकसित हैं। उन्नत क्षेत्रों की विकसित भाषाओं के सिर पर कहीं कोई खतरा नहीं मंडरा रहा है। भाषाओं के लुप्त होने की यह गति ठीक वैसी ही है जैसी कुछ वनस्पतियों या जीवजन्तुओं की है। जिस तरह इनके नाम मात्र सम्बंधित पुस्तकों या बड़े बुजुर्गों की जुबान पर रह गये हैं वैसे ही उन भाषाओं का अस्तित्व भी संदर्भों या स्मृतियों में बचा रह गया है।

प्राय: भाषाएं तभी मरती हैं जब उनके बोलने वाले यह मानने लगते हैं कि उन्हें गले से लगाये रखने से रोजी-रोटी अर्जित करने में बाधा आती है। आजकल विकासशील देशों में यह मान्यता तेजी से मजबूत होती चली जा रही है कि पारम्परिक ढंग से पढ़ेलिखे योग्य युवक भी तब तक अच्छी नौकरी नहीं पा सकते जब तक उनमें अच्छी तरह से अंग्रेजी बोलने-समझने की सामर्थ्य न हो। परिणाम यह है कि अच्छी अंग्रेजी बोलने वाले मातृभाषा भाषी युवकों से आज हर तरह से बेहतर हैसियत में हैं।

अंग्रेजी का इस प्रकार बढ़ता वर्चस्व और मातृभाषाओं के प्रति तेजी से पैदा की जा रही अवहेलना आगे चलकर कुछ भाषाओं की लोकप्रियता को क्षीण कर उन्हें मरणोन्मुख ही नहीं बनायेगी, लोगों को उनकी जड़ों, परम्पराओं, संस्कृतियों व इतिहास से भी विलग कर देगी। उसका सारा पारंपरिक ज्ञान विलुप्त हो जायेगा।

भाषाओं की यह अकाल मृत्यु उस साम्राज्यवाद की देन है जो चन्द विकसित देशों के हितों के लिए शेष सब देशों के हितों को खतरे में डाल देने से जरा भी नहीं हिचकिचाता। क्षेत्रीय भाषाएं स्थानीय बोलियों को और राजभाषा क्षेत्रीय भाषाओं को अपने में विलीन कर रही हैं।

पहले समाज के उच्च शिक्षित सम्पन्न वर्ग में ही अंग्रेजी के प्रति अतिरिक्त मोह था लेकिन पिछले कुछ दशकों से गरीब, पिछड़े, दलित लोग भी अपनी मातृभाषाओं का मोह त्याग कर अंग्रेजी को अपनाने की होड़ में शामिल हो रहे हैं। क्योंकि वे भी आर्थिक सम्पन्नता और सुख सुविधायुक्त जीवन पाने की दौड़ में पीछे नहीं रहना चाहते।

किसी भी जाति या समुदाय को भाषा एवं परम्पराएं एक प्रकार की विशिष्टता, सांस्कृतिक पहचान देती हैं। इससे वे हर तरह की विपत्ति का एकजुट होकर सामना कर लेते हैं। उनकी इस सामूहिकता को तोड़ने के लिए कोई बाहरी शक्ति सबसे पहला काम उनमें अपनी भाषा व संस्कृति के प्रति हेय भाव उत्पन्न करने का करती है। इससे उनका अपनी भाषा के प्रति मोह और संस्कृति के प्रति गर्व तो नष्ट होता ही है उनकी एकजुटता भी खण्डित होती है।

भूमण्डलीकरण अमरीका और उसके चन्द सहयोगी देशों की साम्राज्यवादी आकांक्षाओं को ही साकार करने का एक नया उपक्रम है। इसका एकमात्र मकसद धीरे-धीरे सारी दुनियां में एक संस्कृति, एक भाषा, एक भूषा प्रचलित करने और एक जैसे विचार पैदा करने वाले मस्तिष्कों के निर्माण करने का है।

ध्यान रखें, लोक भाषाएं बचेंगी तो लोक संस्कृतियां भी बची रहेंगी। उनमें समाहित वे मूल्य भी बचे रहेंगे जो लोक को जीने की शक्ति, हर तरह की आपदा-विपदाओं से लड़ने की शक्ति और अपने आचार व्यवहार को मर्यादित रखने की शक्ति देते हैं।

स्मृतियों के शिखर (31) : डॉ. महेन्द्र भानावत

दो दिन बालकवि बैरागी के साथ (3)

हम अच्छे मूड और माहौल में थे। पूरनजी ने मुझे कुहनी का स्पर्श दिया। मैं समझ गया। उनकी हिम्मत लेकर मैंने अपनी पूछ जारी रखी। बोला- 'अब तो लेखन भी विविध सांचों में बिठाया जा रहा है। ऐसी स्थिति में आप अपने लेखन में व्यावसायिक और गैर व्यावसायिक होने के बीच क्या भेद-रेखा महसूस करते हैं?' वे तापक से जोश भरे स्वर में बोले- महेन्द्र भाई ! आपको बांहों में भरकर सीने से लगा लेने का मन कर रहा है।

मेरे और आपके कद की समानता को देखते हुए हो सकता है कि मैं आपको चूम भी लूं। इतना तो आप मानेंगे ही कि भारत आदिकाल से श्रुतियों का देश रहा है। पता नहीं श्रुति को लेखन और लिपि तक कौन लाया? कृपण और धूर्त समाज ने अपने रक्तपान के लिए एक बात पूरी मक्कारी से प्रचलित करदी कि सरस्वती और लक्ष्मी का सनातन बैर चला आ रहा है। सर्जकों, रचनाकारों, चिंतकों, मनीषियों और ऋषियों को भूखे पेट सुलाने और बिना कफन उनकी अर्थियां उठवाने की कितनी शानदार तैयारी है।

जिस समाज ने मेरे बापदादाओं को एक-एक निवाले के लिए तरसाया और तड़फाया, उस समाज से यदि मैं या मुझ जैसे लोग सीना तानकर, आंखों में आंखें डालकर अपनी रोटी की बात करते हैं तो मित्रबंधु उसे व्यावसायिकता का जामा पहिना कर अपनी शाश्वत कृपणता, कुटिलता और कुत्सितता का परिचय देने लगते हैं। एक सोची समझी साजिश का घूंघट यदि समय देवता ने अपनेआप उठा दिया तो मुंह क्यों बिचका रहे हैं?

वातावरण को नया मोड़ देने के लिए मैंने बात बदलते कहा, एकबार जैनेन्द्रजी से पं. जनार्दनराय नागर के घर मेरी भेंट हो गई। तब मैंने उनसे सवाल किया था कि अपने उपन्यासों में आप किसको श्रेष्ठ मानते हैं। उन्होंने जो जवाब दिया, मैं यहां नहीं कहकर आपसे पूछना चाहूंगा कि 'आप अपनी श्रेष्ठ कविता किसे मानते हैं?' उन्होंने बड़े ही संयत भाव में कहा- 'प्रत्येक कविता ने मुझे प्रसवजन्य पीड़ा से रोमांचित किया है। मेरी हर कविता मेरी वैध संतान है। अवैध बच्चा मेरे पास एक भी नहीं है। उसमें सर्वश्रेष्ठ कौन है, यह कहना मेरे लिए कठिन ही नहीं असंभव भी है। चूंकि मेरी सतवंती कलम की कोख अभी सूखी नहीं है, इसलिए आपके इस सवाल का उत्तर मैं सुरसत मैया पर ही छोड़ता हूं।'

सन् 1986 में प्रकाशित अपनी पुस्तक 'जिन्हें मैं जानता हूं' में 'मंगते से मिनिस्टर बालकवि बैरागी' शीर्षक से मैंने एक आलेख लिखा। इस आलेख में मैंने बैरागीजी के एक पत्र का जिक्र किया। 12 जनवरी 1984 के पत्र में उन्होंने लिखा- 'उदयपुर में हुए एक कविसम्मेलन पर मेरे पास पचासों पत्र तारीफ के आये हैं। मैं तो पढ़-पढ़कर हैरान हूं। एक विद्यार्थी का पत्र बहुत मार्मिक था। वह लिखता है कि यदि उस रात वह मुझे नहीं सुनता तो शायद आत्महत्या कर बैठता। अब वह अपने संघर्षों से जूझ रहा है। इस पत्र ने मुझे झकझोर दिया।'

पुस्तक में अपने इस लेख का प्रारंभ ही मैंने इस पंक्ति से किया- 'मंगते से मिनिस्टर' उस पाण्डुलिपि का नाम है जिसे बालकवि बैरागीजी ने अपनी आत्मकथा के रूप में लिखी है। इसी आत्मकथा का एक और भाग 'मिनिस्टर से मनुष्य' भी उन्होंने तैयार कर लिया है पर जो शायद ही कभी जैसी लिखी वैसी छप पायेगी और आलेख के अंत में लिखा- 'चापलूसी और भ्रष्टाचार जहां जीवन में आवश्यक विटामिन बनते जा रहे हैं वहां बैरागीजी इनसे उतने ही दूर रहे- बंगले बने तब भी और मंगते से मिनिस्टर बने तब भी। राजनीति में उन्हें कभी राजभोग ने पीड़ित नहीं किया तो साहित्य में भी उन्होंने कोई शाही रोग नहीं पाला।'

धन्य हुआ टेक्सी चालक :

कितने लोग हैं जो शिक्षक और शिक्षा के महत्व को समझ तवज्जु देते हैं? जितने भी बड़े शिक्षाशास्त्री हुए उनके प्रारंभिक जीवन को निहारें तो पता चलेगा, वे किन-किन कठिनाइयों, संघर्षों और अभावों से गुजरे। हम अपने ही जीवन को झांकें, नहीं पढ़ते तो किन परिस्थितियों में होते! टेक्सी चालक सब सुन रहा था, बोला- 'अभावों में जीता मैं कुछ नहीं पढ़ पाया मगर दुख झेलकर भी बच्चों को पढ़ा रहा हूं। आप लोगों के साथ रह मेरा जीवन धन्य हो गया और बैरागीजी के पास बैठकर तो मैंने सोने का सूरज ही पा लिया। बरसों से इनका नाम सुनता आरहा हूं बोला- सर, मैं भी बैरागी हूं।'

चलती कार में हमने देखा, चालक भाई ने बैरागीजी के चरण छू छलकती आंखों से अपने आंसू पौंछे। आंखें उसकी ही नहीं, हमारी भी भर आईं। कोई बता पायेगा उन आंसुओं का मोल? किसके थे वे आंसू? दुख के! गरीबी के! अनपढ़ रहने के! बैरागीजी के सान्निध्य-सुख के! जातीय गौरव के! सच तो यह है कि आंसुओं का कोई मोल और कोई व्याख्या नहीं हो सकती। शब्द, हृदय और भाव सब मौन हो जाते हैं।

किताबों का कबाड़ा :

पूरन भाई मुझसे बड़े हैं फिर भी उनसे जी चाहे जैसे बतियाने का अधिकार मुझे उन्होंने दे रखा है। मैं बोला- जाते समय अपने पास केवल कपड़े थे। अब किताबों का भार बढ़ गया है। वे बोले- जहां भी जाते हैं, यह भार पीछा नहीं छोड़ता और घरवाले कहते हैं लो फिर ले आये कबाड़ा। मैने कहा, सबको यही सुनने को मिलता है।

किताबें कइयों की समस्याएं बनी हुई हैं। कुछ लोग तो भेंट आई पुस्तकें रद्दी में निकाल देते हैं। कुछ पुस्तकालयों को बेच भी देते हैं। एकबार मैंने एक बंधु से यह सवाल किया तो वे बाले, बहुत सारी किताबें तो व्यर्थ की होती हैं। भेजनेवाले क्यों भेजते हैं? उनका हम कुछ भी करें, किसे क्या पड़ी है? बैरागीजी बोले, मैंने दो लाख करीब मूल्य की किताबें लोकसभा पुस्तकालय को भेंट दे दीं। पूरन बोले, नीमच में भी दादा के नाम बीएड कॉलेज है वहां भी ये पुस्तकें भिजवाते रहते हैं।

मैं बोला, अरे वाह! यह पक्ष मुझे मालूम नहीं था कि दादा के नाम से कॉलेज चल रहा है, सुनते ही बैरागीजी ने कहा, पर मेरा उससे कोई संबंध नहीं है ठीक उसी प्रकार जैसे शिवाजी छाप बंडल से शिवाजी का कोई लेनादेना नहीं है। दादा की इस जिंदादिली पर हम सब मुस्कराये बिना नहीं रह सके।

मंदसौर में हमने पत्रकार शांतिलाल जैन के निवास पर चाय नाश्ता किया। जैन ने कुछ यादगार ऐसे संस्मरण सुनाए जब उन्होंने जोखिम उठाकर खोजी पत्रकारिता के माध्यम से नवभारत को समाचार-समृद्ध किया था। यात्राकाल के दौरान हर पल मुझे यह एहसास होता रहा कि बैरागीजी का जन-सम्पर्क ही नहीं, ग्राम्य-सम्पर्क भी बड़ा विशद और अपनापन लिए है।

डॉ. सहगल की ओळखाण :

उन्हीं की तरह डॉ. सहगल ने भी पराई धरती से आकर मालव जनपद को अपना बनाया और कंठासीन साहित्य का कण-कण सहेजा। उनकी सबसे बड़ी देन मालव भूमि के कई अज्ञात संतों, मुख्यत: पीपाजी तथा चन्द्रसखी के पदों को ज्ञात कर उन्हें साहित्यिक अमरता प्रदान करना है।

उन्हीं की खोजों से इस अंचल की दशौरी बोली अस्तित्व में आई। उन्होंने ओळखाण नामक एक पत्रिका भी शुरू की। साधन-सुविधाओं के नितांत अभाव रहते एक साधारण अध्यापक के रूप में किसी एक व्यक्ति का अपने बूते पर अनवरत कार्य करते रहना पूरनजी का सबसे बड़ा अवदान है। लोकसंस्कृति के शोधार्थियों के लिए तो उनका धाम तीर्थधाम ही बना हुआ है।

बैरागीजी से रास्ते में सड़क के इधर-उधर के गांवों के नामकरण, उद्भव, आख्यान तथा निवासियों की सांस्कृतिक निष्ठा की जानकारी पाकर हम बढ़ ही रहे थे कि उन्होंने इशारा देकर बताया, इस गांव का नाम बोतलगंज है। कभी इसके पास लोग दारू पीने आते और यहां बोतलें फैंक दिया करते थे। कालान्तर में यहां बस्ती बसनी प्रारंभ हुई और उसका नाम बोतलगंज पड़ गया।

धापू धाम से विदाई :

नीमच आने को है। बस स्टेंड से ही पूरनजी को मनासा के लिए गाड़ी पकड़नी है। भीड़ के कारण वे अपना बेग लिए जल्दी ही ओझल हो जाते हैं। हम धापू धाम आ पहुंचे। मेरी यात्रा अभी लम्बी है।

-शेष पृष्ठ सात पर

घुटनों के दर्द का समय पर सही उपचार आवश्यक

-ओर्थोपेडिक्स जॉइंट रिप्लेसमेंट सर्जन डॉ. मनीष शर्मा की सलाह-

सुमेधा जैन (बदला हुआ नाम) को पिछले कई दिनों से घुटनों में तेज़ दर्द महसूस हो रहा था। जब भी वह बैठकर उठती या कुछ समय के लिए पैर मोड़कर बैठती तो घुटनों का दर्द और ज्यादा बढ़ जाता। अपनी मां को इस तकलीफ के बारे में बताते हुए सुमेधा कह रही थी- 'मां, अभी 38 साल की हुई हूं और घुटनों में दर्द ऐसे हो रहा है जैसे 50 साल की हो गई हूं। आजकल तो दर्द की वजह से घर के काम तक करने में दिक्कत आने लगी हैं। मां मैं सोच रही थी कि तुम्हें आर्थ्राइटिस की समस्या है, कहीं इसी वजह से तो मुझे भी घुटनों में दर्द तो नहीं हो रहा।'

'सुमेधा तुम डॉक्टर से चेक करा लो। पहले भी तुमने मीनोपॉज के समय ऐसी ही लापरवाही दिखाई थी। कितनी परेशानी हुई थी, याद है मुझे।' समुेधा की मां समझाते हुए कह रही थी। मां की बातें सुनकर सुमेधा सोच रही थी कि सच में दो साल पहले मीनोपॉज के दौरान भी बहुत मानसिक व शारीरिक परेशानियां हुई थी। अब दो साल बाद घुटनों के दर्द ने उसे परेशान कर दिया है। दरअसल सुमेधा को उम्र से पहले ही मीनोपॉज हो गया और जल्द मीनोपॉज की समस्या से उसकी मां भी गुज़र चुकी थी। जब सुमेधा इस दौर से गुज़र रही थी तो उसकी मां ने बताया कि उसे भी बहुत कम उम्र में मीनोपॉज हो गया था और इसके बाद कई बार जरा सी फिसलन से उसे फ्रैक्चर तक हो जाया करता था। फिर धीरे धीरे घुटनों में दर्द रहने लगा और जब तकलीफ एडवांस स्टेज पर पहुंच गई तो पता चला कि वह ओस्टियोआर्थ्राइटिस से पीड़ित है।

समुधा ने अपनी मां को घुटनों के दर्द में घुटते देखा है और जब उसे मीनोपॉज हुआ था तब का वक्त वह भूल ही नहीं पाती। किस कदर वह परेशान हुई थी। अब तो उसे लग रहा था कि जैसे समय का पहिया उसकी जिंदगी में मां का चक्र चला रहा है। वह अपनी मां की तरह दर्द में नहीं जीना चाहती थी तो वह ओर्थोपेडिक डॉक्टर से मिली।

जिन महिलाओं को उम्र से काफी पहले मीनोपॉज हो जाता है उन्हें अपना खास ख्याल रखने की जरूरत होती है। अगर समय रहते वह संतुलित मात्रा में कैल्शियम व विटामिन डी युक्त आहार नहीं लेती तो उन्हें हड्डियों से जुड़ी बीमारियां होने की संभावना ज्यादा होती है। ओस्टियोआर्थ्राइटिस के हर रोगी का इलाज सर्जरी नहीं होती। बहुत कम लोग हैं जो समय पर इलाज कराते हैं। आमतौर पर लोग एडवांस स्टेज पर इलाज के लिए आते हैं। आजकल कंम्प्यूटर ऐस्सिड नेविगेशन तकनीक ने नी रिप्लेसमेंट को काफी प्रभावी बना दिया है। यह जीरो एरर तकनीक है जिसमें सही अलाइंटमेंट के बाद मरीज़ को प्राकृतिक घुटने जैसा ही अहसास होता है।

उदयपुर के सुधा अस्पताल के डॉयरेक्टर व कंसलटेंट ओर्थोपेडिक्स जॉइंट रिप्लेसमेंट सर्जन डॉ. मनीष शर्मा ने बताया कि मीनोपॉज के बाद नई हड्डियों के निर्माण की दर कम होने लगती है जिससे हड्डियों से जुड़ी समस्याएं होने का खतरा बढ़ जाता है। यह समझना बहुत महत्वपूर्ण है कि 30 की उम्र के बाद शरीर से कैल्शियम का भंडार कम होने लगता है और ऐसे में अगर उम्र से पहले ही मीनोपॉज हो जाए तो बोन डेंसिटी तेज़ी से कम होने लगती है। इसी वजह से हड्डियों में कमज़ोरी होने लगती है। ऐसे में घुटनों पर ज्यादा असर पड़ता है, क्योंकि ये हमारे शरीर का सबसे ज्यादा वज़न उठाते है। इसलिए घुटनों के जोड़ सबसे ज्यादा प्रभावित होते हैं।

इंस्टीटयूट फॉर सोशल एंड इकनोमिक चेंज के सर्वे के अनुसार तकरीबन 4 फीसदी भारतीय महिलाओं की मीनोपॉज उम्र 29 से 34 साल के बीच है तो 7 प्रतिशत महिलाएं 35 से 39 साल की उम्र में मीनोपॉज से गुजरती हैं जबकि दुनिया में इसकी उम्र औसतन 51 साल है। इसलिए जिन महिलाओं को उम्र से काफी पहले मीनोपॉज हो जाता है उन्हें अपना खास ख्याल रखने की जरूरत होती है। अगर समय रहते वह संतुलित मात्रा में कैल्शियम व विटामिन डी युक्त आहार नहीं लेती तो विभिन्न अध्ययनों के मुताबिक उन्हें हड्डियों से जुड़ी बीमारियां होने की संभावना ज्यादा होती है। कुछ इसी तरह की समस्या से सुमेधा भी परेशान थी। जब सुमेधा ओर्थोपेडिक डॉक्टर से मिली तो जांच में पाया गया कि उसे भी ओस्टियोआर्थ्राइटिस की समस्या है लेकिन वह शुरूआती स्टेज पर है तो जीवनशैली में बदलाव व फिजियोथेरेपी से कार्टिलेज की क्षति की गति को काफी हद तक रोका जा सकता है।

इस बारे में डॉ. मनीष शर्मा कहते हैं कि सुमेधा को ओस्टियोआर्थ्राइटिस की समस्या है। इसकी वजह जल्द मीनोपॉज और सही डाइट न लेना हो सकता है लेकिन उसका आर्थ्राइटिस इतना गंभीर नहीं है कि उसकी सर्जरी करनी पड़े। यह जानना बहुत जरूरी है कि ओस्टियोआर्थ्राइटिस के हर रोगी का इलाज सर्जरी नहीं होती। सुमेधा के मामले में भी उसे सर्जरी की जरूरत नहीं है पर उसे खाने में संतुलित डाइट फॉलो करनी होगी और फिजियोथेरेपी से उसके घुटने के दर्द को कम करने की कोशिश की जाएगी।

डॉक्टर ने उसे कसरत करने और खाने पीने में ध्यान देने कई हिदायतें दीं ताकि सुमेधा का आर्थ्राइटिस गंभीर न हो। डॉ. शर्मा कहते हैं कि सुमेधा जैसे बहुत कम लोग हैं जो समय पर इलाज कराते हैं। आमतौर पर लोग एडवांस स्टेज पर इलाज के लिए आते हैं। ऐसे में नी रिप्लेसमेंट ही विकल्प बचता है किंतु सर्जरी का नाम सुनकर लोग इसे टाल देते हैं। लोगों को नई एडवांस तकनीकों की जानकारी नहीं होती है। आजकल कंम्प्यूटर ऐस्सिड नेविगेशन तकनीक ने नी रिप्लेसमेंट को काफी प्रभावी बना दिया है। यह जीरो एरर तकनीक है जिसमें सही अलाइंमेंट के बाद मरीज़ को प्राकृतिक घुटने जैसा ही अहसास होता है। यदि आपको भी सुमेधा की तरह उम्र से पहले मीनोपॉज की समस्या हो तो अपने खाने-पीने पर ध्यान दें। संतुलित भोजन और कसरत से खुद को सेहतमंद रखने की कोशिश करें और समय रहते डॉक्टर से सलाह ले ताकि घुटनों के दर्द का समय पर सही उपचार हो सके।

पोथीखाना

रूठी जिन्ना : नारी सशक्तिकरण का अन्यतम चरित्र

डॉ. राजेन्द्रमोहन भटनागर के ऐतिहसिक उपन्यासों में से दिल्ली चलो, सरदार, सनातन पुरुष, अन्तर्यात्रा, कुली बैरिस्टर आदि 42 उपन्यासों का अपना महत्व है। इसी के आधार पर उनके ऐतिहासिक उपन्यासों की तुलना स्पेनिश लेखक जेवियन मारो कृत द रेड साड़ी, इर्विंग स्टोन कृत लस्ट फार लाइफ आदि से की गई। उनके उपन्यासों का अनुवाद हुआ। पुस्तक रूठी जिन्ना उपन्यास के अंश अहा जिन्दगी, पुनर्नवा, सर्व सृजन, विश्वमुक्ति, जनसत्ता इत्यादि पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो अपनी सुगंध बिखेर चुके हैं।

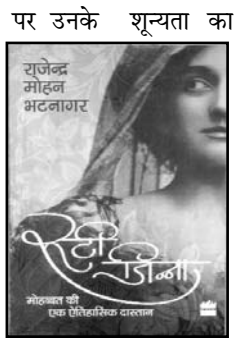

डॉ. भटनागर ने अपने उपन्यासों में प्राय: इतिहास के उन प्रसंगों को उठाया है जिन पर अब तक किसी उपन्यासकार का ध्यान नहीं गया। रूठी उनमें से एक है जो नारी विमर्श और सशक्तिकरण के स्वातंत्र्य संदर्भ का एक अन्यतम चरित्र है। बुलंद और निर्भीक हौंसले, स्वविवेक आधृन निर्णय और जीवन आत्मविश्वास का चरम बुनकर यह चरित्र डॉ. भटनागर की शोध, उर्वर कल्पना और यथार्थ का कमाल है।

संवेदना, संयोजन, मानसिक उदात्तता के उतार-चढ़ाव और जीवन-सत्य के दुर्द्धर्ष संघर्ष से गुजरता हुआ यह उपन्यास मानवीय संचेतना, परिवेशमूलक चिंतन, भाव गरिमा से अनुप्रामाणित, नैतिकता की स्व प्रेरणा से पल्लवित, संस्कारों की ज्योति से तपोनिष्ठ, सार्वजनिक स्त्री-पुरुष और पति-पत्नी के पारस्परिक बाह्य और आंतरिक सम्बंधों को बड़ी सूक्ष्मता और पारदर्शिता से विश्लेषित करता है। इससे पूर्व किसी ने इस गहराई और गरिमा से ऐसा लेखन नहीं किया है।

रूठी का जुझारू चरित्र और जिन्ना का ऊहापोहग्रस्त स्वतंत्र व्यक्तित्व आमने-सामने आकर जिस मुकाम पर पहुंचता है, उससे यह स्पष्ट होने लगता है कि रूठी वैपरीत्य की संपूरकता (काप्लिमेन्ट्रिनेस ऑफ दि ऑपजिट्स) आनंदसिक्त चित्त में उठने वाले तनाव, वैचित्र्य, कुंठा, संत्रास तथा निर्जन शून्यता का तटस्थ एवं साधारणीकृत रूपांतरण बड़ी सहजता से प्रशस्त कर सकी है, जबकि जिन्ना की जिद्द से जन्मा अप्रत्यक्ष अधिकारवाद मन मसोस कर रह जाता है।

डॉ. भटनागर ने इन दो ध्रुवों के एकीकरण से उभरी सामान्य स्थिति में जन्मी उन असामान्य स्थितियों को बहुत बारीकी से उकेर कर पुरुष के छिपे दर्प दंश को उजागर करने में आशातीत सफलता प्राप्त की है। रूठी चरित्र पर तत्कालीन प्रभाव को रेखांकित कर उसकी जिजीविषा के नैरंतर्य, आसक्त-अनासक्त प्रेम के अन्तर्द्वन्द्व और नैरात्म्य (निहिलिज्म) के प्रति अपुष्ट अभिव्यक्ति को उकेर कर एक नये फलक के रूप में उसकी सप्राणता सिद्ध की है।

निस्संदेह रूठी व्यक्तित्व की साधारणता में अन्तर्निहित असाधरणता पर तत्कालीन पुरुषों के निष्कर्ष इसके प्रमाण हैं।

एनी बैसेंट ने कहा था- 'रूठी एक अत्यंत संवेदनशील और समझदार नवयुवती थी। वह एक स्वतंत्र तरुणी थी। वह अपने विवेक के अनुसार अपने विचार को क्षमता के साथ पूरी तरह प्रस्तुत करने में प्रवीण थी।'

मुहम्मद करीम छागला ने रोजेज इन दिसंबर नामक आटोबायोग्राफी में जिक्र किया- 'रूठी पेटिट जिन्ना के चेम्बर में बेशकीमती अलंकरणों से सजीधजी ऐसी लुभावनी और झीनी-झीनी पोशाक में आतीं जो अति आधुनिक मापदण्डों को कोसों पीछे छोड़ देती है। यकीकन वह दबावों से एकदम मुक्त और आजाद ख्याल वाली थीं।'

महात्मा गांधी ने एक पत्र में लिखा था- 'कृपया जिन्ना को मेरी याद दिलाएं और उनसे हिन्दुस्तानी या गुजराती सीखने का आग्रह जरूर करें। अगर आपकी जगह मैं होता तो कम से कम मैं उनसे गुजराती या हिन्दुस्तानी में बात करने लगता। आपको न अंग्रेजी भूलने का कोई खतरा है और न गलत समझे जाने की गुंजायश है। ....हां, मैं आपसे यह मांग कर सकता हूं, क्योंकि मैं आपको जानता हूं कि आपके मन में मेरे लिए प्यार है।'

यंग इंडिया में गांधीजी का यह कथन उल्लेखनीय है-'जलियांवाला कांड में निहत्थे और निरीह जन के नृशंस संहार से रूठी विचलित हुई थी और उसकी याद में बनने वाले स्मारक में मुक्तहस्त से दान देते हुए उसने कहा था- प्रस्तावित स्मारक कम से कम हमें जीने का एक बहाना देगा।'

रूठी की चचेरी बुआ मिठूबेन पेटिट का यह कथन देखिये-'दरअसल जिन्ना और रूठी के बीच जनरेशन गैप था, जिसने एक-दूसरे की पारदर्शिता को खुले मन से कबूल नहीं किया।'

रूठी के अन्तरंग मित्र कानजी द्वारिकादास के अनुसार- 'मोहम्मद अली जिन्ना रूठी की तरह ईमानदार नेक और आजाद खयाल का खुशमिजाज शख्सियत था, जिनको न तो रूठी पेटिट के नाम न बदलने से और न उसके अति सेक्सी पहनावे से कोई शिकायत थी।'

दीवान चमनलाल ने तो यहां तक लिख दिया था- 'इस जहान में ऐसी कोई दूसरी स्त्री नहीं थी जो रूठी के सौंदर्य और मुहब्बत को दीया दिखा सके। जिन्ना की आंतरिक प्रकृति की बुनावट कुछ ऐसी थी कि वह चाहकर भी उसे नहीं समझ सका।' निष्कर्षतया यह उपन्यास आज की नारी सृजना में अन्तर्निहित उस शक्ति, ऊर्जा तथा दिव्यता को प्रस्तुत करने में मील का पत्थर माना जा सकता है जिसके लिए नारी आंदोलन का शोर कुछ न कर पाने की छटपटाहट से गुजर रहा है।

-डॉ. तिप्पे स्वामी

खोज-खबर

मगरे-मगरियों को अग्नि स्नान

मगरे-मगरियों को आग से नहलाने की परम्परा न जाने कब से चली आ रही है पर आजादी के बाद भी इसका अस्तित्व बना हुआ है। एकलिंग गढ़ सैन्य छावनी से सटी पहाड़ी पर जो आग धधकी, वैसी पहले कभी नहीं धधकी। यह आग 60 हेक्टेयर क्षेत्र में फैली। लगभग 24 घंटे धधकती रही तब पहलीबार इसे बुझाने को हैलीकोप्टर की मदद ली गई। गांधीनगर मुख्यालय से हैलीकोप्टर आया। आग बुझाने के लिए 500 मीटर की फायर लाइन बनाई गई। कुल 130 वनकर्मी और श्रमिकों के साथ सेना के 400 जवान लगे। फायर ब्रिगेड ने 8 राउण्ड किये। हैलीकोप्टर ने पीछोला झील से 10 फेरे लगाकर 25 हजार लीटर पानी बरसाया तब जाकर 29 फरवरी 2017 को आग पर कंट्रोल हुआ।

मगरों-मगरियों में आग लगने-लगाने में आदिवासी समाज की भूमिका होना माना जाता है। वे इसे मगरा स्नान कराना कहते हैं। पहले तक यह माना जाता था कि मन्नत पूरी करने पर आदिवासी मगरा नहाते हैं। ऐसा करते समय वे पहले से भगवान के नाम का दीपक जलाते हैं और कहते हैं कि अग्नि स्नान के बाद जब पूरा जंगल नयेपन में खिल उठेगा तो लगेगा जैसे उन्होंने पेरावणी देने का संस्कार किया है। कहा तो यह भी जाता है कि जहां सूखी घास ज्यादा होती है वहां आपसी रगड़ से अग्नि प्रज्वलित होकर धीरे-धीरे फैलती रहती है। बांस भी आपस में टकराकर आग फैलाने में सहायक होते हैं। एक पक्ष की दलील यह भी है कि पहले जंगल अति घने होते थे। पत्तों के जड़ने के कारण, वृक्षों की सूखी टहनियों के कारण, पुराने वृक्षों के धराशायी होने के कारण जब पूरा जंगल अस्तव्यस्त हो जाता और पगड़डी की राह तक नहीं रहती तब पूरे जंगल की शुद्धि के लिए उसे अग्नि भेंट कर दिया जाता है जिससे उसमें निखार हो आता है और उसके बाद पूरी वनराई नवीन भव्य परिवेश में फूट आती है। एक नवीन ताजगी, खुशबू से नवखण्ड और अधिक रूप में खिलखिला उठता है। यह भी सुनने में आता है कि जैसे तपस्या करने से जीवन निखर आता है और आत्म शुद्धि हो जाती है उसी प्रकार जंगल भी जलकर एक तपस्वी की तरह निखर आता है और उसके सौंदर्य में अभिवृद्धि होने लगती है। जंगल के आसपास रहने वाले अथवा उधर से गुजरते लोगों द्वारा सुलगती बीड़ी-सिगरेट फैंकने से भी ऐसा हादसा होना स्वाभाविक है।

जंगलों के बीच अथवा पास से गुजरती बीजली लाइन में शोर्ट सर्किट होने से भी ऐसी दुर्घटना घटना संभव जान पड़ता है। कहा तो यह भी जाता है कि महुआ संग्रहण करते समय असावधानी से घास जलाने के बाद की चिंगारियां भी कभी-कभी आग धधकाने का सबब बन जाती हैं। यह भी कहा जाता है कि शहद संग्रहण के समय धुंआ द्वारा मधुमक्खियों को उड़ाया जाता है तब भी धुंए की लपट आग पैदा करने में सहायक हो जाती है।

आदिवासी समाज के मोतबीर कहते हैं कि पहले कभी ऐसी परम्परा रही है पर अब समाज सजग हो गया है और आग लगने के नुकसान को वह भलीप्रकार जान गया है। जंगल वैसे भी कई कारणों से उजड़ गये हैं। पहाड़ियां टाटली हो गई हैं। कई तरह के वृक्ष तथा जड़ीबूंटियां जो पहले थीं, सदैव के लिए समाप्त हो गई हैं ऐसी स्थिति में जो कुछ बचा रह गया है उसका संरक्षण अनिवार्य आवश्यक है।

शिक्षकों ने सीखे पुतली चलाने के गुर

उत्तराखण्ड के सीमान्त जनपद पिथौरागढ़ के अति दुर्गम एवं नेपाल से सटे विकास क्षेत्र धारचूला में सेवारत् शिक्षक प्रशिक्षण के आयोजन का शुभारम्भ जिला शिक्षा अधिकारी शौकत अल्ली व उप शिक्षा अधिकारी भानुप्रताप कुशवाह ने किया। सी.सी.आर.टी. उदयपुर से प्रशिक्षित अध्यापक दिनेशसिंह रावत ने पुतली कला की संचालन प्रक्रिया का प्रदर्शन किया जो सर्वतोभावेन सराहा गया।

उप शिक्षा अधिकारी ने कहा कि हम विद्यालय स्तर पर इस प्रकार से नवाचारी प्रयोग करते हुए शिक्षण को रूचिकर एवं छात्रोपयोगी बनाने का सकारात्मक प्रयोग करें तो अधिक कारगर सिद्ध हो सकता है। कार्यक्रम में विकास खण्ड के 40 शिक्षक-शिक्षिकाओं के साथ-साथ प्रशिक्षण के अतिरिक्त ब्लाक संसाधन केन्द्र के समन्वयक शंकरदत्त भट्ट, संकुल समन्वयक जय प्रकाश, श्रीमती शारदा खैर, प्राथमिक शिक्षक संगठन के ब्लाक अध्यक्ष गिरधरसिंह रौतेला, प्रशिक्षण के सन्दर्भदाता विनयकुमार पाण्डेय, शिक्षक रमेशचन्द्र जोशी, गोपालसिंह बर्थी एवं कविता थापा भी उपस्थित थे।

प्रधानमंत्री मुद्रा योजना व वित्तीय साक्षरता जागरूकता शिविर आयोजित

उदयपुर सांसद अर्जुनलाल मीणा ने प्रधानमंत्री मुद्रा योजना को सर्व कल्याणकारी बताते हुए बैंकर्स से कहा कि वे इस योजना में अधिक से अधिक लोगों को जोड़कर आमजन को अपने रोजगार एवं आजीविका बढ़ाने के बेहतरीन अवसर प्रदान करें। सांसद मीणा भारत सरकार व राज्य स्तरीय बैंकर्स समिति के दिशा निर्देशानुसार सूचना केन्द्र में प्रधानमंत्री मुद्रा योजना एवं वित्तीय साक्षरता जागरूकता शिविर में मुख्य अतिथि बोल रहे थे। शिविर में 120 से अधिक मुद्रा लोन लाभार्थियों ने भाग लिया। सांसद श्री मीणा ने प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना, जीवन ज्योति व अटल पेंशन योजना पर विस्तार से प्रकाश डाला।

अध्यक्षता करते हुए ग्रामीण विधायक फूलसिंह मीणा ने बैंकों को उनके क्षेत्र में व्यक्तिगत रुचि लेकर अधिक से अधिक मुद्रा योजना ऋण स्वीकृत करने पर जोर दिया।

मुख्य प्रबन्धक मार्गदर्शी बैंक मुकुन्दकुमार भट्ट ने बताया कि जिले में प्रधानमंत्री मुद्रा योजना के तहत अब तक 17 हजार 276 व्यक्तियों को 274 करोड़ रुपये का ऋण वितरण किया गया तथा प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना में एक लाख 75 हजार, जीवन ज्योति बीमा योजना में 48 हजार 911 व अटल पेंशन योजना में 8 हजार 996 व्यक्ति लाभान्वित हुए। श्री भट्ट ने मुद्रा लोन प्राप्त व्यक्तियों के बचत खातों को आधार सीडिंग करने एवं मोबाइल बैंकिंग से जुड़ने पर जोर दिया।

शिविर में एफलसीसी के काउन्सलर ओमप्रकाश मूथा ने प्रधानमंत्री बीमा योजना तथा एसबीआई के मुख्य प्रबंधक जीएल सालवी ने वित्तीय साक्षरता पर प्रकाश डाला। इस मौके पर आरसेटी के एम. के. द्विवेदी ने प्रधानमंत्री मुद्रा योजना के साथ ही डिजिटल ट्रांजेक्शन के बारे में जानकारी दी।

इस अवसर पर पंजाब नेशनल बैंक के परमेश ने भीम एप, एसबीआई के मनीष ने एसबीआई बड्डी के बारे में विस्तृत जानकारी दी। इस दौरान प्रधानमंत्री मुद्रा योजना में लगभग 20 लाख रुपये राशि के चैक अतिथियों के हाथों वितरित किये गये। आभार मार्गदर्शी बैंक के रवीन्द्र सुराना ने जताया।

कहावतों के कहकहे

कहावतें व्यक्ति के जीवन में सर्च लाईट की तरह हैं। वे कई तरह से व्यक्ति का दिशानिर्देश करती हैं। ऐसी अनेकानेक कहावतें लोकजीवन में प्रचलित हैं। यहां डॉ. महेन्द्र भानावत द्वारा संग्रहीत कहावतों का पिटारा प्रारंभ किया जा रहा है।

(1) ऊबे खेजड़े चेव थोड़ी पड़ै
(2) ऊसर में कोई धान नीपजै
(3) एक दांण तो लाखीणो घोड़ो ई ठोकर खावै
(4) एक नन्नो सौ रोग टालै
(5) एक पंथ दो काज कर्‌या
(6) एक पूत पूत में नीं एक आंख आंख में नीं

शब्द रंजन

उदयपुर, गुरुवार 01 जून 2017

सम्पादकीय

पर्यटन स्थलों का आकर्षण

पर्यटन स्थलों की भूमिका कई दृष्टियों से बड़ी महत्वपूर्ण है। ये स्थल मानव सभ्यता को जीवन्त करने वाले इतिहास दर्शन के दस्तावेज ही नहीं होते, हमारी अपनी जीवनधर्मिता के समग्र परिदर्शन के नियामक भी होते हैं। साहित्य, संस्कृति, कला, स्थापत्य, धर्म, दर्शन का कोई पक्ष इनसे अछूता नहीं रहता। पर्यटन स्थलों के साथ-साथ संग्रहालयों की भूमिका भी चिन्हित हुई है। ऐसे विशिष्ट तथा अति विशिष्ट संग्रहालय हैं जहां किसी समय की सभ्यता, जाति, वर्ग, धर्म, संस्कृति, कला का ही मूल्यवान बल्कि बेजोड़ संग्रह देखने को मिलता है।

ऐसे संग्रहालयों के रखरखाव पर भी अधिकाधिक धन-राशि खर्च होती है किन्तु ऐसे संग्रहालय तथा पर्यटन स्थल भी हैं जहां एकबार जो कुछ खर्च होना था, वर्षों से वे वैसे के वैसे बने हुए जीर्ण शीर्ण की स्थिति लिए भी हैं। ऐसे संग्रहालय भी हैं जहां देखने को विशेष कुछ नहीं है किन्तु वे किसी विशिष्ट गौरव तथा आदर्श से जुड़े हुए हैं।

संग्रहालय एवं पर्यटन स्थलों का महत्व तभी सिद्ध होता है जब वे आम आदमी के लिए सुलभ हों। यह तभी सम्भव है जब उनके प्रवेश टिकिट आम व्यक्ति के अनुकूल हों। कई संग्रहालय ऐसे हैं जहां की टिकिट दर दर्शकों को भारी पड़ती है। वे बेमन उत्सुकतावश टिकिट खरीदते हैं किन्तु उन्हें देख लौटकर निराश होते हैं।

यह सत्य है कि निजी संग्रहालयों की टिकिट दर बहुत ऊंची होती है। वहां वाहन का रखरखाव ही बड़ा भारी पड़ जाता है फिर उनके आसपास की दुकानों से पर्यटक जो खरीददारी करता है वह भी रिजनेबल रेट लिए नहीं होती। अखबारों में भी कई बार पर्यटकों की ठगाई के समाचार इस बात की पुष्टि करते नजर आते हैं।

ऐसी स्थिति में हर पर्यटन स्थल पर ऐसे बोर्ड, संकेत स्थल हों जहां पर्यटक पुख्ती सूचना पा सके और उसकी यात्रा स्मरणीय बन सके। धर्मस्थलों पर भी जो पर्यटक पहुंचता है वह विशेष उद्देश्य, आस्था, भावना तथा विश्वास लिए होता है। सैकड़ों लाखों करोड़ों का चढ़ावा वैसे ही वहां आता है। उसके अनुसार सुविधाएं वहां नहीं होतीं। वहां भी पर्यटक ठगा जाता है इसीलिए कहावत है- तीरथां जायां मुंडन वै।

यह सोचनीय है कि हम पर्यटकों को अधिक से अधिक आकर्षित करें। उनके लिए अधिकाधिक सुविधाएं जुटायें। उन पर इतना आर्थिक बोझा न पड़े कि वह वहां आकर ठगा महसूस करे। सही जानकारी उपलब्ध हो और एकबार देखने के बाद भी वह स्वयं उसे पुन: देखने को प्रेरित हो तथा अन्यों को भी उसे देखने को बाध्य करे।

उच्चस्थ परीक्षा परिणाम

आर्ची भाणावत

नतांश हिंगड़

प्रसिद्ध युवा उद्यमी ऋषभ भाणावत की सुपुत्री आर्ची भाणावत तथा उदयपुर शहर जिला कांग्रेस के सचिव मुकेश हिंगड़ के पुत्र नतांश हिंगड़ ने सीबीएससी बोर्ड द्वारा आयोजित बारहवीं विज्ञान संकाय परीक्षा में क्रमश: 96 प्रतिशत तथा 93.6 प्रतिशत अंक प्राप्त कर गौरव अर्जित किया एतदर्थ शब्द रंजन परिवार की हार्दिक बधाई।

राजस्थानी साहित्य पुरस्कार के लिए प्रविष्टियां आमंत्रित

कमला गोइन्का फाउंडेशन के प्रबंध न्यासी श्यामसुन्दर गोइन्का ने बताया कि फाउंडेशन द्वारा प्रदत्त 'मातुश्री कमला गोइन्का राजस्थानी साहित्य पुरस्कार', 'रानी लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत महिला साहित्यकार पुरस्कार' तथा 'किशोर कल्पनाकांत युवा साहित्यकार पुरस्कार' की नियमावली व प्रस्ताव के लिए वेबसाइट www.kgfmumbai.com पर देखें अंतिम तिथि 15 जून है।

अभिनंदनीय

तीस साल से रमल ज्योतिष में रमण

हमारे यहां ज्योतिषियों की कमी नहीं है कारण कि इस विद्या को मानने वाले कई हैं और हर जगह हैं। उन्हें पग-पग पर इनकी शरण लेनी पड़ती है। जन्म, विवाह जैसे प्रसंग तो ज्योतिष से ही बंधे हैं। आस्था और विश्वास के कारण यह विद्या फलफूल रही है।

ज्योतिष के विविध प्रकारों में एक रमल ज्योतिष है जिसके लिए कुंडली अथवा हाथ देखने की जरूरत नहीं होती। प्रश्नकर्ता के नाम, उसके माता-पिता के नाम, जन्म तिथि, पंचांग आदि किसी की आवश्यकता नहीं रहती। अब इसके जानकार बहुत कम रहे हैं। मेवाड़ में केवल कैलाशचंद्र त्रिपाठी ज्योतिर्धर ज्योतिष विशारद हैं जिनसे यहां के टी.आर.आई में भेंट हो गई। वे यहां के पुस्तकालयाध्यक्ष हैं।

त्रिपाठीजी ने बताया कि रमल ज्योतिष का आधार वे ही पांच तत्व-अग्नि, वायु, जल, पृथ्वी, आकाश हैं फर्क यही है कि इसमें 12 राशि की जगह 16 घर होते हैं। एक चन्द्र एक सूर्य का अतिरिक्त तथा एक-एक राहू केतु का होता है। राशि के बारह घर के अलावा ये चार घर और होते हैं। यह विद्या अरबी में है जिसका प्रचार-प्रसार मुगल काल में अधिक था और अब इसे सउदी अरब, कुवैत, दुबई आदि में अधिक मान्यता प्राप्त है। पूरा का पूरा ग्रहों का गणित शास्त्र है जिसमें प्रश्नकर्ता के हाथ से पासे डलवाये जाते हैं। ये पासे अरबी में कुरा नाम से जाने जाते हैं।

त्रिपाठी पासों के बदले गेहूं की चार छोटी-छोटी ढेरियां करवाते हैं। एक ढेरी में 30-40 से अधिक गेहूं नहीं होते। उन्हीं चारों की जोड़ से वे जितने भी प्रश्न होते हैं, उनका उत्तर, त्रि-काल भूत, वर्तमान, भविष्य का कथन करते हैं। ऐसे जिज्ञासु आस्थासु उनके पास आते रहते हैं। उन्होंने कई ऐसी घटनाएं बताईं जिनका कथन सत्य सिद्ध हुआ। अच्छा-बुरा जो भी कथन-परिणाम उन्हें मिलता है, वे स्पष्ट संकेत कर देते हैं।

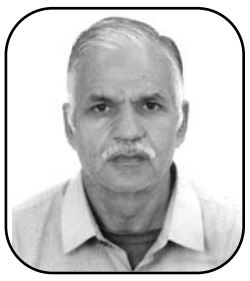

हालांकि मृत्यु प्रसंग अथवा गंभीर घात-प्रतिघात जैसे पक्षों पर वे स्पष्ट नहीं कह कर मात्र इशारा कर देते हैं।

उनके जीवन में ऐसे कई व्यक्ति आए जिनको उन्होंने ज्योतिष के हिसाब से सावचेत कर दिया। अपनी ओर से सुझाव भी दे दिया। किसी गंभीर घटना के घटने की आशंका से उन्होंने वो उपाय भी बता दिया जिसके कारण वह घटना गंभीर परिणाम नहीं देकर आंशिक परिणाम दे सके।

जिन्होंने उनकी बात को विश्वास के साथ स्वीकार किया वे गंभीर आघातों से बचे रह सके किंतु जिन्होंने उनके कथन को चलता कर दिया उन्हें गंभीर घात का सामना करना पड़ा। बातों ही बातों में उन्होंने ऐसी कई घटनाएं सुनाई जिनसे मुझे यह लगा कि त्रिपाठीजी के पास जो ज्योतिष विद्या है उसका उन्हें गहरा अनुभव है और वे अपने भविष्य कथन को गंभीरता से लेते हैं और जातकों को कहे गए विचारों के परिणामों तक जाकर अध्ययन करते हैं और व्यावहारिक रूप से अपना आत्मचिंतन करते हुए अपने को भी परखते हैं।

उन्होंने बताया कि एक व्यक्ति को उन्होंने प्रेम विवाह के लिए स्पष्ट मना किया किंतु वह नहीं माना और प्रेम विवाह में बंध गया लेकिन कुछ ही समय बाद उसे मृत्यु-घात लगा। ऐसे ही कई व्यक्तियों को भावी खतरों, परेशानियों, झगड़े टंटों के होने की आशंका बताई किंतु जिन्होंने उनकी बात को आईगई कर दिया वे भारी मुसीबत में पड़े। बाद में उन्होंने उसका उपचार भी चाहा किंतु त्रिपाठीजी ने बताया कि जब सिर से पानी फिसल जाता है तब सारे उपाय निष्फल ही सिद्ध होते हैं।

त्रिपाठीजी हिन्दी में एमए और ज्योतिष में विशारद ज्योतिर्विज्ञ हैं। उन्होंने बताया कि देवकीनंदन खत्री ने अपने चन्द्रकांता उपन्यास में रमल ज्योतिष का सर्वाधिक उपयोग किया। उन्होंने 30 वर्ष पूर्व इस ज्योतिष को सीखा। राजस्थान में इसके जानकार बहुत कम हैं। भरतपुर, कोटा तथा मोही में एकाध जानकार हों तो हों। त्रिपाठीजी ने कई नेताओं को जीवन और जीत में रमल से संबल दिया। हवन किये और घात टाले। कई तरह के परिणाम और गुप्त कथन कहने के भी नहीं होते लेकिन इसके माध्यम से भी कोई चाहे तो सेवा कार्य कर सकता है। रमल में त्रिपाठीजी गीता को आदर्श मानते हैं और इस क्षेत्र में लगातार उपलब्धि अर्जित करने बाबत अदृश्य अध्यात्म का भी संबल याद करते हैं।

-डॉ. तुक्तक भानावत

सुमित्रा महाजन द्वारा सहकार भवन का लोकार्पण

लोकसभाध्यक्ष श्रीमती सुमित्रा महाजन ने राजसमन्द में 1.22 करोड़ की लागत से नवनिर्मित सहकार भवन का लोकार्पण तथा 50 लाख की लागत से बनने वाले सहकारी सुपर मार्केट का शिलान्यास किया। इस दौरान अतिथियों के रूप में उच्च शिक्षा मंत्री श्रीमती किरण माहेश्वरी, सहकारिता मंत्री अजयसिंह किलक, सांसद हरिओमसिंह राठौड़ व नगर परिषद के सभापति सुरेश पालीवाल उपस्थित थे।

श्रीमती महाजन को जिला कलक्टर पीसी बेरवाल, जिला पुलिस अधीक्षक मनोज कुमार एवं अतिरिक्त जिला कलक्टर बृजमोहन बैरवा ने प्रभु श्रीनाथजी की छवि भेंट की। सहकारिता एवं गौपालन मंत्री अजयसिंह किलक ने महाजन का स्वागत किया और राजस्थान की सहकारिता को मजबूत करने समय प्रदान करने के लिए आभार व्यक्त किया। राजस्थान में सहकारिता गतिविधियों के उल्लेखनीय विकास एवं व्यापक विस्तार की जानकारी दी और कहा कि प्रदेश में मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे के नेतृत्व में सहकार आन्दोलन उत्तरोत्तर मजबूती पाता जा रहा है। श्रीमती महाजन ने मेवाड़ की धरती को देशभक्ति, शौर्य-पराक्रम, पुरातन संस्कृति और गौरवशाली इतिहास से परिपूर्ण बताया और कहा कि देश-दुनिया के लोगों में राजस्थान की छवि अनूठी है। उन्होंने महाराणा प्रताप, हल्दीघाटी, पन्नाधाय, मीरा, हाड़ा रानी, पद्मिनी, भामाशाह आदि का स्मरण किया और कहा कि इस धरोहर और परंपराओं से सीखने, अनुकरण करने और समाज को कुछ देने की जरूरत है।

लोकसभाध्यक्ष ने भिक्षु निलयम में बालिका उत्थान शिविर का शुभारंभ किया और कहा कि पुरुष से भी स्त्री ऊपर है। पुरुष पराक्रमी है तो महिला उसकी दिशा और दशा बदलने में समर्थ मार्गदृष्टा है। पुरुष को अच्छे रास्ते और यथोचित कर्म की ओर ले जाने का गुण स्त्री में ही है। स्त्री-पुरुष को एक रथ के दो पहिये बताने के मिथक से अलग हटते हुए उन्होंने कहा कि पुरुष रथी है तो स्त्री रथ की सारथि। जीवन रथ को वही अच्छी दिशा देती है। एक स्त्री में ही यह सामर्थ्य है कि वह अलग-अलग स्वभाव वाले सारे घरवालों को मैनेज करती है। बालिकाएं जीवन में पढ़ाई-लिखाई के साथ ही नियमित स्वाध्याय को अपनाएं, एक-दूसरे से हुनर और अच्छाइयों को सीखें, अच्छी सहेलियां बनाएं, जन्मदिन पर हस्तकौशल का उपयोग करते हुए तोहफे दें और इस चिन्तन को अपनाएं कि मैं क्या कर सकती हूं, मैं भी कुछ कर सकती हूँ। उच्च शिक्षामंत्री श्रीमती किरण माहेश्वरी ने बताया कि शिविर में बालिकाओं और महिलाओं की रुचि के अनुरूप उनके स्वयं सहायता समूह बनाकर उन्हें आत्मनिर्भरतापरक गतिविधियों से जोड़ा जाएगा। राजसमन्द की बेटियों के लिए शनि धाम के सहयोग से कक्षा नवीं से बारहवीं तक विशेष कोचिंग चलाने की योजना है।

लोकभाषाओं में वाचिक परंपरा की संस्कृति (1)

-डॉ. प्रयाग जोशी-

वाचिक परंपरा की विधाओं के लिए 'लोकसाहित्य' और ज्ञान-विज्ञान सहित समग्र जानकारियों के लिए 'लोकवार्ता' शब्द चलाये गये। ये शब्द खोजियों, लेखकों, प्रकाशकों में तो लोकप्रिय हो गए पर जिस 'लोक' में यह साहित्य उपलब्ध होता है वहां इस शब्द का निहितार्थ कोई नहीं समझता। हिंदी के गाइड समझते हैं कि हम अपने जान-पहिचान के नये लेखकों, कविताकारों को शोध का विषय बना देंगे तो वे बड़े हो जायेंगे। कवि, लेखक अपनी रचनाओं से बड़े बनते हैं। शोध पर पुथन्ने लिखने, लिखवाने से कोई बड़ा नहीं बनता, परंतु ऐसी सोच के अध्यापक मेहनती छात्रों को ऐसे कामों में लगाकर उनकी बुद्धि को कुंठित तो करते ही हैं, शोधों का स्तर भी गिराते हैं।

हमारी आंचलिक बोलियों के ऊपर हिंदी का छाता तना हुआ है परंतु इसे 'छत्रछाया' नहीं समझना चाहिये। बोलियां, छाते को थामे हुए हैं। वे उसे पोषित और संवर्द्धित करती हैं। आज हम स्कूलों, कॉलेजों और गांवों में हिंदी की बढ़ती देख रहे हैं। उसकी जैसी बढ़न आज है वैसी हमारी उम्र के लोगों के बचपन में नहीं थी। हमारी उम्र के लोग, स्वतंत्रता प्राप्ति के दसक की पैदाइस के लोग हैं। पांचवीं कक्षा पास करने तक हमारी हिंदी सिर्फ पाठ्य-पुस्तकों तक ही सीमित थी। हिंदी के पाठ के अलावा स्कूल के सारे व्यवहार हम अपनी बोली में करते थे। न केवल विद्यार्थियों के बीच अपितु अध्यापकों के साथ भी पाठ्येतर संवाद मातृ बोली में ही होते थे। गांव-घरों में हिंदी बोलने वाले को 'अहंकारी' व 'शान' बघारने वाला समझा जाता था।

मेरी मां सन् 2000 तक जीवित रहीं। उनके साथ हिंदी में बात करने की मैं कल्पना भी नहीं कर सकता था। अब हमारे बाद की पीढ़ियों से बोलियां गायब हैं। बचपन में, जैसे हम कक्षा में हिंदी और उसके बाहर स्कूल और घर-गांव के संपूर्ण व्यवहार अपनी बोलियों में करते थे, उसी तरह हमारे बच्चे स्कूल की कक्षाओं में अंग्रेजी और पाठ्येतर व्यवहार एवं स्कूल-कॉलेजों से बाहर हिंदी में व्यवहार करते हैं। इस स्थिति से हम, हमारी बोलियों की 'भाषा' और उसके मौखिक पारंपरिक साहित्य का भविष्य-फल अनुमान सकते हैं।

हमारी बोलियां और उसमें संरक्षित वाचिक परंपरा के साहित्य की संपूर्ण विधाओं के विरासत की जिम्मेदारी हिंदी की है। उसमें, उसके संरक्षण के काम की शुरूआत तो हुई है परंतु वह 'पारिभाषिकता', 'शास्त्रीयता', 'सिद्धांतवादिता' और पीएच.डी. उपाधियों के लिए लिखी जाने वाली 'थीसिसों' के बने बनाए ढांचों के 'सांचों' में घिर कर रह गई है। उसको औपचारिक संजालों ने 'पैक' कर लिया है।

उसके साहित्य के, हिंदी शिक्षण की प्राथमिक कक्षाओं से ही समावेश कराने और बोलियों के अभ्यास कराने की बात तो दूर, पुराने पाठ्यक्रमों में निर्धारित पाठों के अंत में दिये जाने वाले अभ्यासार्थ प्रश्नों में 'लोकोक्तियों' की पहचान कराने और उनको स्वरचित वाक्यों में प्रयुक्त कराने के लिए अध्यापकों को निर्देश तो हुआ करते थे। अब वे भी देखने में नहीं आते। शेष ; 'लोक' शब्द के पूर्व-प्रत्यय परस्पर जुड़े गीत, गाथा, नाट्य, कथादि के बारे में कभी कुछ देखने में न तब आता था अब तो वह अकल्पनीय किंवा असंभव जैसा ही हो गया है। हमारे बच्चे गांवों में भी शहरी होते जा रहे हैं और शहरों में विदेशी।

वाचिक परंपरा की उक्त सभी विधाओं के लिए 'लोकसाहित्य' और ज्ञान-विज्ञान सहित समग्र जानकारियों के लिए 'लोकवार्ता' शब्द चलाये गये। ये शब्द खोजियों, लेखकों, प्रकाशकों में तो लोकप्रिय हो गए पर जिस 'लोक' में यह साहित्य उपलब्ध होता है वहां इस शब्द का निहितार्थ कोई नहीं समझता। जिसे हम 'लोककथा' कहते हैं उसे वह 'दंतकथा' के नाम से जानता है। जिसे हम 'लोकनाट्य' नाम से पहचानते हैं उसे स्वांग, ठेटर, तमाशा, नौटंकी आदि विधाओं के नाम से जाना जाता है। 'लोकगाथा' शब्द भी बोलियों में नहीं है। वहां जागर, पवाड़ा, ऋतुरैंण, भड़ाग आदि प्रकारों में उसे पहचानना पड़ता है। हां 'वार्ता' शब्द की छाया 'वात' में जरूर देखने को मिलती है।

कहने की जरूरत नहीं कि लोकवार्ता, लोकसाहित्य, लोकगीत, लोकगाथा, लोककथा, लोकनाट्यादि शब्द हमने पारिभाषिक बना डाले हैं और उनकी व्युत्पत्ति, गढ़न, चलन और उनके समानार्थी संस्कृत और अंग्रेजी शब्दों की दुनियां में टोहने-टटोलने का एक रास्ता बना डाला है। इस तौर-तरीकों में हमारे निर्धारित किये गये शब्दों और उनकी परिव्याप्तियों से होती हुई किताबी शोधें इतनी दूर चली गई हैं कि क्षेत्रीय सर्वेक्षण और संकलन कार्यों से उनका वास्ता ही लगभग शून्य सा हो गया है। क्षेत्रीयता उनमें उजागर हो ही नहीं पा रही। इस तरह की शोधों से हमारी अध्ययन की खामियां रेखांकित हो रही हैं और शोधित्सु पाते जा रहे हैं उपाधियां।

मेरी एक छात्रा एम.ए. उत्तरार्द्ध की परीक्षा में, डिजर्टेशन के लिए विषय चयन हेतु सलाह लेने आई। मैंने लोकसाहित्य के किसी टॉपिक पर उसे काम करने का परामर्श दिया। छात्रा होशियार थी पर उसने लोकसाहित्य शब्द सुना ही नहीं था। बाद में उसने स्त्रियों द्वारा उस जनपद में गाये जाने वाले गीतों पर लघु शोध प्रबंध प्रस्तुत किया। उसकी भूमिका में उसने जो शब्द लिखे वे उद्घृत करने लायक हैं।

उसने लिखा है- 'जब जोशी सर ने मुझसे कहा कि दशहरे की छुट्टियों के बाद एक सौ लोकगीत इकट्ठे करके मुझे दिखाओ तो लोकसाहित्य में तुम्हारा मार्गदर्शन कर सकते हैं अन्यथा तुम 'शोध' का चक्कर छोड़कर 'साहित्यिक निबंध' का ही विकल्प चुनो ; तो मेरी समझ में कुछ नहीं आया। मैंने लोकसाहित्य शब्द ही पहलीबार सुना था। उस समय इस शब्द का जो मनगढंत आशय लगाया उसी के अवलंब से कहा था, 'सर! मुझे गाना नहीं आता।' उन्होंने कहा, 'उसकी जरूरत नहीं है। लोगों से, विशेष करके स्त्रियों से लिखवाकर इकट्ठे कर लाओ।'

सुनकर मेरा असमंजस और भी बढ़ गया था। मेरे पास खड़ी मंजू बोली थी, 'सर मैं लिखकर लाऊंगी।' सर ने पूछा, 'क्या लिखकर लाओगी।' वह बोली, 'हमारे गांव में स्त्रियां ढोलकी में जो गीत गाती हैं वो।' उस पर सर ने मेरी ओर उंगली उठाकर कहा था, 'तुमसे नहीं, इससे कह रहा हूं।'

स्पष्ट था कि मंजू लोकगीत पहचानती थी। मैं उन्हें जानती तो थी पहचानती नहीं थी। मेरी समझ में डिजर्टेशन से उसका संबंध आया ही नहीं। घर जाकर उस पूरे प्रकरण की चर्चा की तो मां, भाभी और बहनों ने भी यह शब्द नहीं सुन रखा था। गांव-घरों के गीतों का एम. ए. उच्चतम कक्षा की परीक्षा से क्या संबंध हो सकता है, इस पर उनमें बतकही होने लगी। मैं मंजू की मदद से ही सखी-सहेलियों से पूछताछ कर अनमने भाव से 20 गीत लिखकर सर को दिखाने ले गई तो घबराहट में थी परंतु उन्होंने कहा- 'ठीक है। इसी तरह इकट्ठा करो' तो मैं बाग-बाग हो उठी थी। उन्होंने कहा था- 'अपने ही परिवार और नाते-रिश्तों की स्त्रियों से शुरू करो।'

उनकी सलाह को गांठ बांधकर मैं काम करने लगी। शुरूआत वृद्धा दादी से की। उन्होंने सोहर, बियाह, कर्ण छेदन, मुण्डन, सुहाग और देवीजी के गीत लिखवाए। फिर मैं बुआ के घर गई। उनसे छठी, बधाई, बरही, पसनी, तिलक और जनेऊ के गीत लिखाए। उनकी पड़ौसन ने भी इसमें रुचि दिखाई। द्वाराचार, भांवर और पैर पूजा के गीत उसने ही लिखाए हैं। फिर तो मैं जैसे राह ही पा गई। रिश्तेदारियों में ही घूमती रही। दीदी सरोज की ससुराल गई तो दाहद, सरवंत, साध, सरिया, रोचना व सिल पोहनी के गीत लिख लाई।

- शेष पृष्ठ सात पर

बम्बोरा में साहित्यिक पुरस्कारों की हेलमेल

व्यक्ति चाहे बड़ा आकाश नापले, जन्मभूमि के प्रति उसका लगाव अंत तक अमिट बना रहता है। इसी ऊंडे सोच से डॉ. दिलीप धींग ने अपने घर बम्बोरा में प्रताप जयंती 29 मई को साहित्यिक समारोह

आयोजित किया। सन् 1950 से पूर्व मैं बम्बोरा गया था तब बेतरतीब घाटे-घाटियों को पार कर उबड़-खाबड़ रास्तों से पहुंचना होता था। अकेला यात्री मार्ग में लूट लिया जाता था।

अपने परिवार के साथ जाने पर भी एक लारेवाला हमारे आगे-आगे कांधे पर लाठी टिकाये चल रहा था जिससे हम निर्भय बने रहे। यात्रा के लिए घोड़ा तथा ऊंट परुण होता था। बम्बोरा तब वीरान, खड्डे खोचरों वाला, सुविधा और साधन हीन गांव था। ऐसे गांव को भूंज गांव कहते हैं। मणिधारी भुजंग ऐसे ही भूंज गांव की देन होते हैं। लेकिन अब बम्बोरा बदल गया है। आधुनिकता की रौनक लिए एक ताजी हलचल में है तब भी उसका पुरानापन और भौगोलिक स्वभाव उतना ही कठिन तथा संघर्षजीवी बना हुआ है।

डॉ. दिलीप धींग से मेरा जुड़ाव उनके पिता कन्हैयालाल धींग के सहपाठी होने से है। वे सन् 1950 से 52 तक कानोड़ के जवाहर विद्यापीठ में मेरे साथ कक्षा 6 से 8 तक पढ़े। शनिवार को होने वाली साप्ताहिक सभा में मेरा कविता लिखना, बोलना, अंत्याक्षरी करना, निबंध तथा मोनोएक्टिंग की प्रतियोगिताओं में भाग लेना तथा वार्षिक समारोह में नाटक मंचन द्वारा पुरस्कार पाने की पहचान शुरू हो गई थी। कन्हैयालाल मेरे घनिष्ट मित्र के रूप में लगातार हमारी हर गतिविधि के सच्चे स्नेही तथा हमदम हुए रहते। उस काल के उनके लिखे कुछ पत्र भी मेरे संग्रह में उनकी स्मृति के साक्षी बने हुए हैं। वे अंत तक एक सहृदय, स्नेहशील तथा सद्भावी धर्मात्मा बने रहे।

साहित्यिक दृष्टि से जो कन्हैयालाल होना चाहते थे, परिस्थितिवश नहीं हो सके पर दिलीप ने होकर उनके स्वप्न, सोच को बड़े गौरवपूर्ण ढंग से साकार किया जिसकी उल्लसित उम्मीद पाकर कन्हैयालाल का पूरा परिवार गर्विला जोश लिये रहा। इस कारण भी सबने मिलकर उनके निधन के बाद उनकी स्मृति को अक्षुण्ण रखने के लिए कोई 15 वर्ष पूर्व 'कन्हैयालाल धींग राजस्थानी पुरस्कार' प्रारंभ किया और शायद इसीलिए मुझे उसमें आमंत्रित किया। उदयपुर के राजमहल में उस प्रथम समारोह का साक्षी बना तब वह पूरा अतीत मेरे स्मृति पटल पर टीवी की तरह रंग-तरंग होता रहा।

साहित्यिक संस्था युगधारा ने इस समारोह के आयोजन का जिम्मा लिया जिसका निर्वाह उसके सदस्य साथी मिलकर बड़ी शालीनता तथा सुरुचितापूर्वक आज भी करते आ रहे हैं।

बम्बोरा के मैथी भवन में हुए इस बार के आयोजन में पिछले तथा इस वर्ष के दो पुरस्कार प्रदान किये गये जिसके प्राप्तकर्ता डॉ. तारा दीक्षित तथा मनमोहन मधुकर थे।

युगधारा के ऐसे ही एक समारोह में एकबार डॉ. दिलीप धींग ने मुझे अपनी मातुश्री से मिलाया जिनका पूरा जीवन लोकधर्मी तानोंबानों, संस्कारों एवं सृजन-सरोकारों से जुड़ा हुआ पाया। वे प्रतिदिन नियमपूर्वक माला फेरने, सामायिक-प्रतिक्रमण करने, सीमित लीलोतियों के साथ रात्रि भोजन का त्याग रखने, समयबद्ध व्रत-उपवास करने जैसी जैनत्व से जुड़ी कठोर क्रियाओं से बंधा जीवन जीने की प्रबल अभ्यासी बनी हुई थीं। उनके निधन से पूरे बम्बोरा में ही नहीं, मेवाड़ क्षेत्र में लोकधर्मी, धर्मजीवी लोक को बड़ा आघात लगा।

डॉ. दिलीप ने बड़ी होशियारी से पूरे परिवार को संभाला और माता के नाम से भी 'उमरावदेवी धींग साहित्योदय पुरस्कार' प्रारंभ किया। बम्बोरा के समारोह में यह प्रथम पुरस्कार किरणबाला जीनगर को प्रदान किया गया। वहीं पता चला कि किरणबाला राजकीय स्कूल में प्रिंसिपल पदासीन हैं और आज ही वे साहित्यिकों के सुमधुर सान्निध्य

में 41वें वर्ष में प्रवेश कर रही हैं। उनके इस उल्लास में सभी ने अपनी आत्मीय खुशी का तालियों की साक्षी में इजहार किया। ऐसे खुशनुमा वातावरण में किरणबाला ने प्रतिवर्ष अपनी ओर से अपने पिता-माता के नाम पर 'ओमशारदा साहित्य पुरस्कार' प्रदान करने की प्रभावी घोषणा की।

समारोह की अध्यक्षता वहीं के शिक्षासेवी निर्भयसिंह सक्सेना ने की। समारोह को रमणणीय बनाने के लिए डॉ. मनोहर श्रीमाली तथा पुरुषोत्तम 'पल्लव' ने अपनी राजस्थानी कविताओं से सबको रससिक्त कर दिया। युगधारा के संस्थापक ज्योतिपुंज, अध्यक्ष लालदास पर्जन्य, भवानीशंकर गौड़, हबीब अनुरागी, सोमशेखर व्यास, महेश बालक, दीपक नगायच, कविता दाणी, चेतन औदिच्य सभी नामचीन कवि थे जिनका काव्यपाठ पूरे रास्तेभर भी रंजन देता रहा। ख्यात चित्रकारों में प्रख्यातनाम डॉ. बीना बया की उपस्थिति ने समारोह में सबका ध्यान आकृष्ट किया। समारोह में कविता सुनाने का उनका एक अलग रूप सबको चकित किये रहा।

समारोह के बाद सुखद पक्ष कम कहनीय नहीं है जब सभी आगंतुकों ने पास ही डॉ. दिलीप के निवास पर दाल-बाटी-चूरमे का मेवाड़ का पारंपरिक और विशिष्ट मेहमानी भोजन ग्रहण किया। धींग परिवार के सुरेश धींग, सीमा धींग, आर.एल. धींग, सरोज धींग, प्रणत धींग ने बड़ी आत्मीयता से परोसकारी कर याद-दाद का समा बांध दिया। इन सबमें बुजुर्ग स्मृति शेष कन्हैयालाल के अग्रज शांतिलालजी (84) से मेरी भेंट विशेष उपलब्धिमूलक रही। दरअसल इन्हीं का विशेष भावभरा आग्रह था कि इसबार सब लोग उनके गृह-गांव के मेहमान बनें। उनका आतिथ्य ग्रहण करें और धींग परिवार को धन्यता दें। बरसों बाद मेरे लिए ही नहीं, सभी साथियों के लिए यह समारोह आने वाले लंबे समय तक का यादगार बन गया जिसका संयोजन-नियोजन डॉ. दिलीप धींग के हाथों रहा। **-म. भा.**

शहर की हलचल

यूआईटी पुलिया का कटारिया, कृपलानी व रावत द्वारा लोकार्पण

वर्षाकाल में उदयपुर शहर के बाशिंदों को आवागमन की बाधा से निजात दिलाने वाली महत्वपूर्ण 377.50 लाख की लागत से नगर विकास प्रन्यास द्वारा नवनिर्मित यूआईटी पुलिया का लोकार्पण प्रदेश के गृहमंत्री गुलाबचंद

कटारिया, नगरीय विकास एवं स्वायत्त शासन मंत्री श्रीचंद कृपलानी एवं ग्रामीण विकास पंचायतीराज राज्यमंत्री धनसिंह रावत ने पट्टिका अनावरण कर किया।

इस अवसर पर कटारिया ने प्रन्यास को तय अवधि से एक माह पूर्व कार्य पूर्ण कराने के लिए बधाई देते हुए कहा कि शहर के विकास के लिए यूआईटी एवं नगर निगम लयबद्ध होकर कार्य कर रहे हैं जिससे शहर को कई महत्वपूर्ण सौगातें मिली है। विगत 15 दिनों में उदयपुर के विकास के लिए 35 करोड़ के कार्यों की स्वीकृतियां नगरीय विकास मंत्रालय से मिलना भी महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

श्री कटारिया ने कहा कि उदयपुर के यातायात को सुगम बनाने की दिशा में बहुप्रतीक्षित ठोकर चौराहा रेलवे अंडर पास के लिए 7 करोड़ की स्वीकृति जारी कर दी गई है। साथ ही अन्य अंडरपास व ओवरब्रिज के लिए भी स्वीकृति के प्रयास किए जा रहे हैं। श्री कटारिया ने कहा कि उदयपुर का महाराणा प्रताप खेलगांव विश्व स्तरीय खेलों के आयोजन के लिए निरंतर प्रगति की ओर है। यहां 27 करोड़ की लागत से बनने वाला मल्टीपरपज इंडोर स्टेडियम राष्ट्र भर में अनूठा होगा।

श्री कटारिया ने कहा कि उदयपुर मावली मारवाड़ रेल लाइन के लिए 1500 करोड़ मिलने से क्षेत्र के औद्योगिक विकास के नए आयाम स्थापित होंगे। वहीं शहर में एलीवेटेड रोड़ की स्थापना, 2500 करोड़ का किशनगढ़-अहमदाबाद 6 लेन राजमार्ग, नीमजमाता रोप वे, आयड़ नदी सौंदर्यीकरण, शहर में हेमराज राष्ट्रीय व्यायामशाला, देवाली छोर पर एसआईईआरटी भूमि सहित अन्य पार्किंग स्थलों का विकास आदि शहर के विकास को नई दिशा देंगे।

समारोह में नगरीस विकास मंत्री श्रीचंद कृपलानी ने कहा कि मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे की अग्रणी सोच से राजस्थान के सभी नगर निकाय क्षेत्र खूबसूरत और स्मार्ट बनने की ओर अग्रसर है। 600 करोड़ की लागत से एलईडी लाइट्स व अन्य विकास कार्य जारी हैं। सभी नगर पालिकाएं विडियो कॉन्फ्रेंसिंग से जोड़ी जा रही है, वहीं हर जरूरतमंद को सस्ती दर पर खाना मिल सके इसके लिए हर शहर में अन्नपूर्णा वेन उपलब्ध कराई जा रही है।

ग्रामीण विकास एवं पंचायतीराज राज्यमंत्री धनसिंह रावत ने कहा कि विकास के लिए जन-जन को एकजुट होकर कार्य करने की जरूरत है। उदयपुर सांसद अर्जुनलाल मीणा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे की दूरदर्शी सोच से चलाई जा रही कल्याणकारी योजनाओं को गरीब एवं जरूरतमंद तक पहुंचाने की महती आवश्यकता है।

स्वागत उद्बोधन में नगर विकास प्रन्यास अध्यक्ष रवीन्द्र श्रीमाली ने कहा कि नगर विकास प्रन्यास अपनी पैराफेरी क्षेत्र को विकास का पूरा-पूरा लाभ पहुंचाने के लिए संकल्पबद्ध है। शहर के नजदीक नांदेश्वर पर्यटन स्थल को विकसित करने के लिए 28 लाख, अमरखजी स्थल के लिए 13 लाख, झामरकोटड़ा मार्ग पर गीतांजलि-तितरड़ी मार्ग के लिए 55 लाख की स्वीकृति के साथ ही विभिन्न क्षेत्रों में पौधरोपण एवं सौंदर्यीकरण के कार्य स्वीकृत किए गए है। यूआईटी सचिव रामनिवास मेहता ने भी संबोधित किया।

अधिशाशी अभियंता मुकेश जानी ने बताया कि यूआईटी पुलिया का कार्य 19 जून 2016 को आरंभ किया गया था। जिसमें 46.40 मीटर लम्बी, 15.27 मीटर चौड़ी तथा 2.85 मीटर ऊंची पुलिया बनाई है।

समारोह में उदयपुर ग्रामीण विधायक फूलसिंह मीणा, जिला प्रमुख शांतिलाल मेघवाल, महापौर चन्द्रसिंह कोठारी, उपमहापौर लोकेश द्विवेदी, समाजसेवी गुणवंतसिंह झाला, दिनेश भट्ट, प्रमोद सामर, वीरेन्द्र बापना, महेन्द्र सिंह शेखावत, अतुल चंडालिया, पारस सिंघवी, हंसा माली, किरण जैन, प्रेमसिंह शक्तावत, युधिष्ठिर कुमावत सहित बड़ी संख्या में पार्षद, क्षेत्रीय जनप्रतिनिधि एवं गणमान्य लोग मौजूद थे। कार्यक्रम का संचालन राजेन्द्र सेन ने किया।

पार्थ को जन्मदिवस पर बधाई

29 मई को अपने जन्म के तीसरे वर्ष में प्रवेश पर श्रेया-डॉ. आशिष गर्ग के लाड़ले पार्थ गर्ग को अकूत बधाइयां।

प्रो. चंडालिया राष्ट्रपति के प्रतिनिधि मनोनीत

जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग में आचार्य प्रो. हेमेन्द्र चंडालिया को भारत सरकार ने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की सर्वोच्च संस्था 'कोर्ट' में राष्ट्रपति के प्रतिनिधि के रूप में मनोनीत किया है। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. जी. सी. त्रिपाठी ने प्रो. चंडालिया को लिखे पत्र में बताया कि भारत के राष्ट्रपति ने विश्वविद्यालय के विजिटर की हैसियत से बनारस हिन्दू विवि की सर्वोच्च नीति निर्धारक संस्था 'कोर्ट' में अपना प्रतिनिधि नियुक्त किया है। कोर्ट का दायित्व महामहिम राष्ट्रपति एवं विश्वविद्यालय की अन्य अधिकृतियों को सलाह देना है। मानव संसाधन विकास मंत्रालय के उपसचिव की ओर से जारी आदेश के अनुसार यह नियुक्ति तीन वर्ष के लिए की गई है।

डॉ. सरीन राष्ट्रीय समन्वयक नियुक्त

गीतांजलि मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पिटल के बाल विभागाध्यक्ष डॉ. देवेन्द्र सरीन को राष्ट्रीय स्तर पर इंडियन चाइल्ड एब्यूज एण्ड नेगलेक्ट एण्ड चाइल्ड लेबर ग्रुप के उत्तरी भारत का समन्वयक नियुक्त किया है। भारतीय बाल चिकित्सा अकादमी ने डॉ. सरीन का चयन उनकी सेवा भावना और उत्कृष्ट कार्यों के आधार पर किया है।

सक्का ने बनाई सबसे छोटी चांदी की ताश

शिल्पकार इकबाल सक्का ने विश्व का सबसे छोटा चांदी का ताश सेट बनाया है। 52 पत्तों का यह सेट मात्र 8 गुना 6 मिलीमीटर आकार का है। सूक्ष्मदर्शी लेन्स की सहायता से स्पष्ट दिखाई देने वाली इस ताश को विश्व रिकार्ड बुक में दर्ज करने का दावा प्रस्तुत किया है।

मोदी सरकार के तीन साल पर सूक्ष्म डायरी

शिल्प कलाकार चन्द्र प्रकाश चित्तौड़ा ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सरकार के तीन वर्ष पूर्ण होने का सफरनामा सूक्ष्म डायरी में उतारा। डेढ़ बाई दो इंच की 65 पृष्ठीय रंग-बिरंगे पन्नों की डायरी में नरेन्द्र मोदी सरकार की अब तक की विभिन्न योजनाओं व उपलब्धियों को उतारा गया है।

वोडाफोन नेटवर्क 32000 गांवों में उपलब्ध

वोडाफोन इण्डिया ने कुछ सालों में ग्रामीण राजस्थान के 32000 से ज़्यादा गांवों को अत्याधुनिक आईपी नेटवर्क के साथ कनेक्ट करने और राज्य के भीतरी इलाकों में रहने वाले इन ग्रामीणों को विश्वस्तरीय सेवाओं का लाभ पहुंचाने के लिए दस हजार से ज़्यादा साईट्स स्थापित की हैं। वोडाफोन इण्डिया में राजस्थान के बिजनेस हैड अमित बेदी ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में अपने मौजूदगी को सशक्त बनाने तथा राजस्थान के निवासियों के साथ जुड़ने के प्रयास में वोडाफोन ने 'सरपंच कनेक्ट प्रोग्राम' की शुरूआत की है, जो 100 से ज़्यादा गांवों के 15000 लोगों के साथ जुड़कर अपनी बातें साझा करता है। ग्रामीण क्षेत्र में वितरण प्रणाली को और सशक्त करने के उद्देश्य से वोडाफोन ने पांच सौ आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित करने के साथ ही दो सौ से अधिक आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को वितरण प्रणाली में शामिल भी किया। इस प्रयास से वोडाफोन ने 'राजस्थान्स वोडाफोन, वोडाफोन्स राजस्थान' कथन को जीवंत रखा।

अमित बेदी ने कहा कि हमें खुशी है कि वोडाफोन का नेटवर्क अब ग्रामीण राजस्थान के 32000 से ज़्यादा गांवों में उपलब्ध है। स्थानीय आबादी के साथ जुड़ने के प्रयास में हम अत्याधुनिक उत्पादों और सेवाओं के माध्यम से लोगों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए प्रयासरत हैं। ग्रामीण उपभोक्ताओं की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए वोडाफोन ने ग्रामीण राजस्थान में 75000 मल्टी ब्राण्ड आउटलेट्स के साथ सबसे बड़ी संख्या में रीटेल टच-पॉइन्ट्स स्थापित किए हैं।

इन टच पॉइन्ट्स में वोडाफोन स्टोर, वोडाफोन मिनी स्टोर और एसोसिएटेड डिस्ट्रीब्यूटर्स वोडाफोन मिनी स्टोर शामिल हैं। राजस्थान में वोडाफोन सुपरनेट 4जी स्ट्रॉन्ग फाइबर बैकहॉल पर बना है, जो 3जी और 4जी नेटवर्क पर शानदार डेटा फ्लो एवं कनेक्टिविटी का अनुभव प्रदान करता है। उपभोक्ता अपने पसंदीदा ऐप्स के माध्यम से वीडियो एवं म्युज़िक के तेज़ डाउनलोड/ अपलोड, वीडियो चैट आदि का लुत्फ़ उठा सकते हैं।

सोनिक पर दक्षिण अफ्रीका ट्रिप जीतने का मौका

बच्चों के लिए भारत का एक्सक्लुसिव एक्शन और कॉमेडी डेस्टिनेशन, सोनिक अपनी मनोरंजक सामग्री के द्वारा रोचक अनुभव प्रदान करने वाला है। बच्चे प्रतिदिन शाम 5.30 से 7.30 बजे तक सोनिक पर

शिवा- द सुपरकिड की राईड के साथ ओगी एण्ड द कॉकरोचेस की चेज़ में शामिल होकर पकड़म पकड़ाई की कॉमेडी का मजा लेते हुए शो के दौरान पूछे गए तीन सरल प्रश्नों के उत्तर देकर दक्षिण अफ्रीका के 3 शानदार स्थानों के लिए 3 रात/ 4 दिन की ट्रिप जीत सकते हैं और वहां जंगल सफारी में हाथी, तेंदुओं और शेरों के को नज़दीक से निहार सकेंगे।

प्रिया अग्रवाल वेदान्ता के निदेशक मण्डल में

वेदान्ता समूह के चेयरमैन अनिल अग्रवाल की सुपुत्री प्रिया अग्रवाल वेदान्ता लिमिटेड के निदेशक मण्डल में नॉन-एग्जिक्यूटीव डायरेक्टर के पद पर नियुक्त की गई है। अमन मेहता को नॉन-एग्जिक्यूटीव इण्डिपेन्डेट डायरेक्टर नियुक्त किया गया है। प्रिया अग्रवाल ने यू.के. वारविक यूनिवर्सिटी से बिजनेस मेनेजमैन्ट के साथ बी.एससी. साईक्लोजी में उपाधि हासिल की। अमन मेहता ने दिल्ली विश्वविद्यालय से इकोनॉमिक्स में स्नातक की डिग्री हासिल की। वर्ष 2004 में एच.एस.बी.सी. समूह की एशिया पेसिफिक के चीफ एग्जिक्यूटिव ऑफिसर के पद से सेवानिवृत्ति के पश्चात् विभिन्न उच्च पदों पर कार्य करने का मेहता को 39 वर्ष का अनुभव है।

वोडाफोन के नये प्लान लॉन्च

टेलीकॉम ऑपरेटर वोडाफोन ने तीन नए प्लान लॉन्च किए हैं। वोडाफोन सुपर डे और वोडाफोन सुपर वीक के इन प्लान्स में उपभोक्ता अनलिमिटेड लोकल कॉल, एसटीडी कॉल के साथ ही 4जी डाटा का लाभ उठा सकते हैं।

वोडाफोन इण्डिया में डायरेक्टर-कॉमर्शियल संदीप कटारिया ने कहा कि वोडाफोन सुपरडे के साथ उपभोक्ता 19 रुपये में एक दिन के लिए वोडाफोन नेटवर्क पर अनलिमिटेड लोकल और एसटीडी कॉल्स कर सकते हैं, साथ ही उन्हें 100 एमबी डेटा (केवल 4 जी हैण्डसैट के लिए) बिल्कुल मुफ्त मिलेगा। वोडाफोन सुपरवीक के साथ उपभोक्ता 49 रुपये की कीमत पर एक सप्ताह के लिए अनलिमिटेड लोकल और एसडीटी कॉल्स के साथ 250 एमबी डेटा (केवल 4 जी हैण्डसैट के लिए) का लुत्फ़ उठा सकते हैं। इसके अलावा 89 रुपये में वोडाफोन सुपर वीक ऑफर के साथ दूसरे नेटवर्कों पर 100 मिनट के अतिरिक्त टॉक-टाईम का भी लाभ उठा सकते हैं। साथ ही उपभोक्ता इन इंटेग्रेटेड पैक्स की अनलिमिटेड रीपीट परचेज़ के विकल्प के साथ अपने हर दिन को सुपरडे और हर सप्ताह को सुपरवीक बना सकते हैं।

सुरक्षित सेफ्टी वाल्व है कविता

-डॉ. मालती शर्मा

तुम्हारा नाम न याद आने वाले
मेरे समानधर्म रचनाकार
तुमने शायद ठीक ही कहा था
अकेलेपन का रोना कविता में
कब तक रोया जाये।
कहां तक और कितना रोया जाय।
कविता के शब्द पी लेते हैं तुम्हारा दर्द
बनते हैं सांत्वना
सुन लेते हैं तुम्हारा दुख
और सीख लेते हैं गिले शिकवे शिकायतें
अपने में तुम्हारी आहों, कराहों, आंसुओं को।
पर वे पीठ पर रखा सांत्वना का
मांसल हाथ आंसू पोंछती ऊंगलियां
तड़फते हृदय को चिपका कर
बांहों में भर लेने वाला
आलिंगन नहीं बनते न?
पर कविता अशरीरी अमूर्त रूप में भी
सारे मनोवेगों, संवेदनाओं की
दुश्चिन्ता प्रतिकारों की सहभागी है।
सुरक्षित सेफ्टी वाल्व है कविता
हमेशा से रही और रहेगी।

दो दिन बालकवि.....

(पृष्ठ दो का शेष)

बैरागीजी मेरे कंधे पर हाथ रख धापू धाम की ठीक से ओळखाण कराते हैं-

इक्क तरफ जांगीड़ है, इक्क तरफ है जाट।
दोनों ही के बीच में, बाबाजी के ठाठ।।

देखते-देखते बीती यात्रा की सारी हंसीखुशी नदारद हो गई। मैं भारी मन से अकेला गुमसुम बैठा बढ़ रहा हूं अपने गंतव्य की ओर।

कहना नहीं होगा कि वैरागीजी और भले ही बहुत कुछ सबकुछ हों मगर वे हर समय कवि-हृदय की धड़कन लिए ही धन्य बने रहते हैं। तभी तो सन् 1932 की 10 फरवरी को जन्मे बालकवि बैरागी को उनके जन्मदिवस पर जब मैंने बधाई दी तब भी उनका कवि-मन उल्लसित हो मुझे ये पंक्तियां सुना बैठा-

जनम-जनम के पाप पुराने, रंगे हाथ पकड़ा जाते हैं।
लम्बा जीकर क्या मरते हो, घरवाले घबरा जाते हैं।।

बालकवि बैरागी का सर्वाधिक लेखन तो उनका पत्र-साहित्य ही है जो वे प्रतिदिन ही लिखते हैं। हर पत्र का उत्तर देना उनका सुभाव है। होली-दीवाली तो वे अपने सभी मित्रों की काव्यमय सुध ले ही लेते हैं। अन्य अवसरों पर भी उनकी खोजखबर लेना उनकी लोकप्रियता तथा सर्वग्राह्य सहृदयता का कमनीय कमाल है। **- समाप्त**

लोकभाषाओं में वाचिक.....

(पृष्ठ पांच का शेष)

उक्त छात्रा ने फाग, बारहमासा, गंगामाई व मांडव के गीतों के अलावा विवाह के अवसर पर गाए जाने वाले गारियों, परिछन, नटका आदि के साथ आल्हा, सावंत, कजरी और होरी के गीतों का भी अच्छा संग्रह किया। उनके अनुभवों से मुझे जो अनेक चीजें सूझीं उनमें सबसे बड़ी यह थी कि जो विद्यार्थी सचमुच के मेधावी और मेहनती होते हैं उन्हें साहित्यिक निबंध का ही विकल्प चुनने के लिए प्रेरित करना चाहिए। अध्यापक उनको शोध की तरफ लगाते हैं और लघु शोध प्रबंध में खूब नंबर देकर-दिलवाकर इतनी ऊंची प्रतिशत में पहुंचा देते हैं कि वह अहेता अविश्वसनीय जैसी हो उठती है।

लघु शोध प्रबंध वह बैषाखी है जिसके सहारे मध्यम दर्जे का छात्र अनुसंधान के मार्ग में चलना सीखता है। ऐसे विद्यार्थियों पर एम.ए. के प्रथम वर्ष की कक्षा से ही नजर रखनी पड़ती है। आदिकाल, निर्गुणिये-सगुणिये भक्त, कवियों व सूफियों को पढ़ाते हुए लोक पक्ष को उनके सम्मुख उद्घाटित कर देना पड़ता है। उसी सिलसिले में लोकसाहित्य की चर्चा और उदाहरणस्वरूप कुछ नमूने विद्यार्थियों को दे देने पड़ते हैं। ग्रामीण पृष्ठभूमि से आने वाले छात्र इस विधा के अच्छे संधित्सु सिद्ध होते हैं। उनको दी गई कार्य-योजना का आधा संकलन और क्षेत्रीय खोजबीन से संबंधित होना चाहिये। मेरा तो यहां तक कहना है कि उच्चस्तर के संकलन कार्य पर भी डिग्री दी जा सकती है। विश्वविद्यालयों को इस तरह की कोशिश करके देखनी चाहिये। हिंदी के गाइड समझते हैं कि हम अपने जान-पहिचान के नये लेखकों, कविताकारों को शोध का विषय बना देंगे तो वे बड़े हो जायेंगे। कवि, लेखक अपनी रचनाओं से बड़े बनते हैं। शोध पर पुथन्ने लिखने, लिखवाने से कोई बड़ा नहीं बनता, परंतु ऐसी सोच के अध्यापक मेहनती छात्रों को ऐसे कामों में लगाकर उनकी बुद्धि को कुंठित तो करते ही हैं, शोधों का स्तर भी गिराते हैं। **-शेष अगले अंक में**

कान्यो-मान्यो

एक कैणी री चाल मांय चाल

यूं लागै कै आज रो जीवण बड़ो फास्ट वेइग्यो है। मान्यो कान्या रौ बोल नीचे नी पड़वा दीधो नै बोल्यो के फास्ट नीं, म्हनै तो फास्टम फास्ट लागै। काम नीं कौड़ी रौ ने वगत नीं नख जतरौ। कान्यो बोल्यो पैली लोगां में संप ही, धीरज ही। पाव घड़ी बैठ एक-दूजा रौ हालचाल पूछता। मुसबत में काम आवता। अबै भूत ज्यूं भागमभाग मच री है। कीनै कंडी नी पड़ी। फगद राम नाम जपणो नै परायो माल अपणो। निगा चुक्या कै माल परायो। सगळी ठौड़ लूट मची है। खेल-खेल में म्हां कैवता कै राम नाम री लूट है, लूट सकै तो लूट / अंतकाल पछतायगो प्राण जावेलो छूट।

मान्या ने या वात सुण मजो आइग्यो। बोल्यो कै कान्या थारे पां तो पैली रो खजानो भर्‌यो है। वै न वै थूं पैली रो जीव है। सतयुग मांय भी थूं अजोध्या में रामजी रै राज में रियोड़ो लागै जदी ज थारै मन में सबर है। आपाधापी नी है। सगळा नै साथ लै चालै। एकळखोरो नीं है। चार टेमरु ने चार बोर भी थारै कनै वै तो थूं मनवार करै नै बोलै, रामई की चड़िया, रामजी को खेत, खावो रे चीड़ा-चीड़ी भर-भर पेट।

कान्यो बोल्यो म्हूं तो एक वात जाणूं कै पैली रा लोगां मांय सबर ही। सबर में सार है। कोई ऊंची-नीची वात वैती तो ठंडा दिमाग सूं काम लैवता। थारी-म्हारी नीं करता। वात-वात में आंख्यां काड़ कुरता री बायां नीं चड़ावता। म्हारी मावड़ एक कैणी सुणावती नै वींरो अरथ बतावती जदी मान्यो बोल्यो कै थूं तो मोटो ग्यानी लागै। म्हनैई वा कैणी तो सुणाय दै।

कान्यो मन ई मन मावड़ नै नमण करी नै कैणी सरु कीधी- एक कुमार हो। वणी आपरी पड़साल मांय हांडा ऊंधा कीदा जदी आवती-जावती गायां वांनै फोड़ै। पूछ्यो कै काओ गायां, थां हांडा क्यूं फोड़ौ? बोली कै म्हांनै गवाळो नीं चरावै जदी गवाळ भाई नै पूछ्यो कै थूं गायां नै क्यूं नीं चरावै तो बोल्यो कै गा-धणी रोटी नीं दै। पूछना कराई तो पतो लागो कै घट्टी नीं फरी तो पीसणो नी व्यौ। आटो वै तौ रोटी वणै।

घट्टी नी फरवारी वात गळे नीं उतरी जदी पतो चाल्यौ कै पामणा आया जो घट्टी माथै बैठा। पामणा बोल्या कै बरखा अतरी आई कै आखौ घर टपकवा लागौ। अतरी बरखा क्यूं बरसी, पूछना कराई तो बरखा बाई बोली कै मोर्‌या बोलणो सरु कीधौ तो ढब्याई नीं जदी मूसलाधार बरसणो पड़्यौ। मोर्‌यां पां सकायत पोंची कै मोर्‌या भाई छनेक तो ढब जावता। सगळा रो जीणो हराम वेइग्यौ। मोर्‌या तो मोड़्या हा। मरोड़ सूं बोल्या, बोलांगा नै फैर बोलूंगा, म्हाणा दादाजी रो देस है। या वात सुण सगळा छाना रेइग्या। मोर्‌याऊं कुण माथो मारै।

मान्यो बोल्यो, समै देख नै चालणो। आजाद वियां पछै तो मोर्‌या रा भाव और वधग्या है वी आपणा राष्ट्र रा मान्यता सुदी पंखेरु है।

इंडियन मोबाइल कांग्रेस का शुभारंभ

उदयपुर। दूरसंचार मंत्री मनोज सिन्हा ने इंडियन मोबाइल कांग्रेस का उद्घाटन किया। यह भारत में टेलीकम, इंटरनेट और मोबाइल सेवा के सभी

भागीदारों को एकजुट करने का पहला और सबसे बड़ा प्रयास है जिसमें आईसीटी प्लेयर्स, ऐप डेवलपर, इनोवेटर और स्टार्ट-अप्स भी भाग लेंगे।

सीओएआई और के एण्ड डी कम्युनिकेशंस लि. ने इंडिया मोबाइल कांग्रेस के माध्यम से एक ऐसे प्लैटफार्म की स्थापना की है जिसका विशेष कर दक्षिण एशिया में लंबे समय से इंतजार था। इससे पूरा इकोसिस्टम एकजुट हो कर उन मसलों का हल करेगा जो दुनिया के इस हिस्से में अब तक चुनौती रहे हैं। भारत में एक अरब से अधिक कनेक्शन इंडस्ट्री के लिए एक बड़ी उपलब्धि के साथ बड़े बदलाव की शुरुआत है। ऐसे में देश के अंदर अंतर्राष्ट्रीय स्तर का यह आयोजन समय और स्थान दोनों दृष्टिकोणों से उपयुक्त है।

आज पूरी दुनिया का लक्ष्य सस्ता और बाधारहित वॉयस और डाटा कनेक्टिवीटी सुलभ कराना है। गौरतलब है कि 2020 तक 20-50 अरब से अधिक कनेक्शन के साथ देश में इस उद्योग का एक सुनहरा भविष्य है। तीन दिन का आईएमसी 27-29 सितंबर तक नई दिल्ली के प्रगति मैदान में होगा। इसमें सरकारी संगठन, दूरसंचार सेवा प्रदाता, हैण्डसेट निर्माता, इंटरनेट की बड़ी कम्पनियां, ग्लोबल टेक्नोलॉजी प्लेयर, एवं कम्पनियां, मोबिलीटी लीडर, शिक्षा जगत, स्टार्ट-अप्स और ऐप-प्रोवाइडर्स भाग लेंगे।

आयोजन के शेड्यूल की घोषणा और इसका लोगो जारी करते हुए श्री सिन्हा ने कहा कि इंडिया मोबाइल कांग्रेस भारतीय टेलीकम उद्योग का सबसे बड़ा आयोजन होगा। इंडस्ट्री और सरकार के सभी भागीदारों का साझा मंच होगा। इससे जुड़े सभी लोगों को सूचना एवं संचार तकनीक की दुनिया को गहराई से जानने और इसमें नई ऊंचाइयों पर जाने का उत्साहवर्द्धक अवसर मिलेगा।

सीओएआई के महानिदेशक राजन एस मैथ्यूज़ ने बताया कि सीओएआई और के एण्ड डी कम्युनिकशंस मिलकर आयोजन का एक विश्व स्तरीय परिवेश तैयार करेंगे। इंडिया मोबाइल कांग्रेस भारत का सबसे भव्य आयोजन होगा। हमें विश्वास है कि इस दौरान होने वाले विमर्श से वैश्विक नीति की जानकारी बढ़ेगी और आने वाले वर्षों में यह नए लांच और नई टेक्नोलॉजी पेश करने का पसंदीदा आयोजन होगा।

डॉ. महेन्द्र भानावत का महत्वपूर्ण साहित्य

डॉ. महेन्द्र भानावत की करीब 90 पुस्तकें प्रकाशित हैं। उनमें से बहुत अप्राप्य हैं। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से संबंधित अभिनंदन ग्रंथ 'लोक मनस्वी' प्रकाशन प्रक्रिया में है। उनकी लिखित कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें इस प्रकार हैं-

पुस्तक का नाम	मूल्य
भारतीय लोकनाट्य	1500/
परंपरा का लोक	475/
आदिवासी लोक	350/-
जनजाति जीवन और संस्कृति	295/-
महाराष्ट्र के लोकनृत्य	200/-
आदिवासी जीवनधारा	395/-
जनजातियों के धार्मिक सरोकार	150/-
राजस्थान के लोकनृत्य	200/-
गुजरात के लोकनृत्य	200/-
राजस्थान के लोक देवी देवता-	150/-
भारतीय लोकमाध्यम	75/-
अजूबा भारत	200/-
पाबूजी की पड़	50/-
लोककलाओं का आजादीकरण	250/-
उदयपुर के आदिवासी	250/-
निर्भय मीरां	250/-
रंग रूड़ो राजस्थान	100/-
कुंवारे देश के आदिवासी	100/-
जन्हें मैं जानता हूं	100/-

ऐंडीबेंडी कविता

(1)
कान्यो मान्यो कुर्रे।
घी में रोटी चुर्रे।।
चिड़िया उड़गी फुर्रे।
खेल-खेल में धुर्रे।।

(2)
पूड़ी उपसी तेल मे।
राणी रूठी म्हेल में।।
डूंगो डाकू जेल में।
सैर सपाटो रेल में।।

(3)
जीम्यां पैली सूप है।
मिनखां देही रूप है।।
सरद्यां सेवै धूप है।
रात अंधारो गूप है।।

(4)
पाणी पैली पाळ है।
भोजन पैली थाळ है।।
सुपना मां जंजाळ है।
मर्‌यां मोळ वै खाळ है।।

हमारे पास शब्द रंजन है आपके पास और भी बहुत कुछ कृपया सहयोग करें

संरक्षक	**11000/**
विशिष्ट सदस्य	**5000/**
आजीवन सदस्य	**3000/**
शब्दरंजन के सहयात्री	**1000/**
साहित्यिक चौपाल	**500/**
वार्षिक संस्थागत	**300/**
वार्षिक व्यक्तिगत	**250/**

शब्दरंजन में विज्ञापन सहयोग कर अपने इस पत्र को और अधिक रंगदार, रूपवान तथा समाज विकास का अग्रणी प्रतिनिधि पत्र बनायें।

(**Shabd Ranjan**, UCO BANK, Bhupalpura Branch, Udaipur, a/c no. 18450210000908, IFSC no. UCBA0001845, a/c type- Current a/c)

कृपया रचनाएं ई-मेल से भेजें तो सुविधाजनक शीघ्र प्राप्त होंगी।

shabdranjanudr@gmail.com

पी.आई.एम.एस. हॉस्पिटल

उमरड़ा, उदयपुर

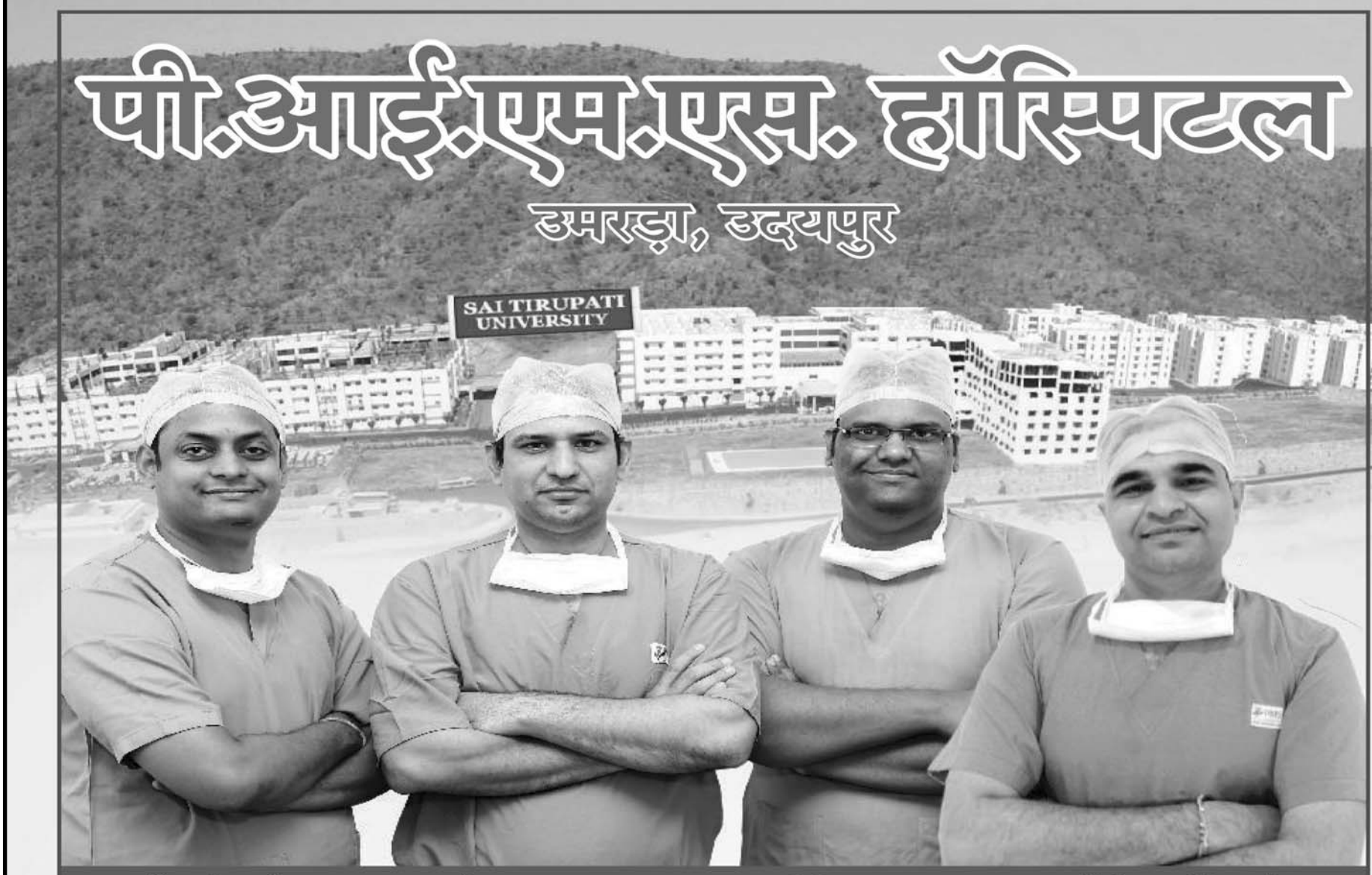

डॉ. प्रवीण झंवर
एम.एस. (जनरल सर्जरी)
एम.सी.एच. (पिडियाट्रिक सर्जरी)
कन्सलटेन्ट-पिडियाट्रिक सर्जन
पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज

डॉ. सुभाष जाखड़
एम.एस. (जनरल सर्जरी)
एम.सी.एच. (न्युरो सर्जन)
कन्सलटेन्ट-न्यूरो सर्जन
पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज

डॉ. विकास गुप्ता
एम.एस. (सर्जरी)
डी.एन.बी. (यूरोलॉजी)
कंसलटेन्ट-यूरोलॉजिस्ट
पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज

डॉ. विक्रम सिंह राठौड़
एम.एस. (ईएनटी)
कन्सलटेन्ट-ईएनटी सर्जन
पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज

450 बेडेड हॉस्पिटल

14 ऑपरेशन थिएटर

65 बेडेड गहन चिकित्सा ईकाई

24/7 आपातकालीन सेवाएं

ICU • ICCU • PICU • NICU • SICU • BURN ICU

Separate Male & Female General Wards, Deluxe Rooms, Modular Operation Theatres, ICU, ICCU, PICU, NICU, Burn ICU
Neuro ICU, Dialysis Center, Endoscopy & Colonoscopy, CSSD, Canteen, Laundry, Morgue,

1.5 TESLA MRI & 128 SLICE C.T. SCANNER

भामाशाह स्वास्थ्य बीमा योजना

भामाशाह स्वास्थ्य बीमा योजना के अंतर्गत 3 लाख तक का नि:शुल्क उपचार

कैशलेस सुविधा | तुरन्त भर्ती एवं जाँच | तुरन्त उपचार | नि:शुल्क दवाईयाँ

राजस्थान सरकार से अधिकृत संभाग का एकमात्र
DOT - ART Center

सेवाओं में विस्तार के साथ निम्न इंश्योरेन्स कम्पनियों हेतू टी.पी.ए. विपुल मेड कोर्प द्वारा अधिकृत संस्थान

National Insurance | IFFCO-TOKIO GENERAL INSURANCE | Apollo Munich | bharti AXA general insurance | Universal Sompo | RELIANCE General Insurance | HDFC ERGO | Max Bupa | ICICI Lombard

साई तिरूपति यूनिवर्सिटी
उदयपुर

पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज	MBBS	0294-3010000, 9587890082
वेन्केटेश्वर कॉलेज ऑफ नर्सिंग	B.Sc., M.Sc.	0294-3010015, 9587890063
वेन्केटेश्वर स्कूल ऑफ नर्सिंग	GNM	0294-3010015, 9587890063
वेन्केटेश्वर इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मेसी	D. Pharma	0294-3010015, 9587890082

PIMS

पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज

अम्बुआ रोड़, ग्राम उमरडा, तह. गिर्वा, उदयपुर-313015 (राज.) 0294-3010000 www.saitirupatiuniversity.ac.in

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, टाईटल रजि. RAJHIN17670, Email : shabdranjanudr@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।